नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 150
दि. 04.03.2026,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

हरमूस के साए में नई साझेदारी: पश्चिम एशिया की जंग के बीच भारत-रूस की रणनीतिक चाल

पश्चिम एशिया में भड़की ईरान-इजराइल की जंग ने जिस तरह से पूरे क्षेत्र को अपनी आगोश में लिया है, उसने वैश्विक राजनीति और ऊर्जा बाजारों की धुरी ही हिला दी है। खाड़ी के आसमान में गूंजते ड्रोन और मिसाइलों की आवाज़ों के बीच जब दुनिया की निगाहें तेहरान और तेल अवीव पर टिकी थीं, तब समुद्री रास्तों, तेल टैंकरों और ऊर्जा आपूर्ति की नसों में एक अलग ही खामोश हलचल शुरू हो चुकी थी। स्थिति उस समय और गंभीर हो गई जब ईरान समर्थित रिवोल्यूशनरी गार्ड्स ने स्ट्रेट ऑफ हरमूस, यानी फारस की खाड़ी के प्रवेश द्वार, को बंद करने की घोषणा कर दी। यह वही जलडमरूमध्य है, जहां से दुनिया के कुल तेल व्यापार का लगभग पांचवां हिस्सा गुजरता है। ईरान की चेतावनी थी कि यदि किसी भी देश ने गैस या तेल व्यापार के लिए इस मार्ग का इस्तेमाल किया तो उसके जहाजों को निशाना बनाया जाएगा।

इस घोषणा का असर तत्काल दिखा। फारस की खाड़ी के आसपास 700 से अधिक तेल टैंकर फंस गए। बीमा कंपनियों ने प्रीमियम बढ़ा दिए, शिपिंग कंपनियों ने जहाजों को रोकना शुरू कर दिया और अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें अचानक उछल गईं। 9 प्रतिशत से अधिक की तेजी ने 52 हफ्तों का रिकॉर्ड तोड़ दिया। तेल बाजार की इस घबराहट ने ऊर्जा आयात पर निर्भर देशों की चिंता बढ़ा दी। विशेष रूप से भारत जैसे देश के लिए, जो अपनी घरेलू जरूरतों का लगभग 85 प्रतिशत तेल आयात करता है, यह संकट किसी आर्थिक भूकंप से कम नहीं था। भारत के आयात का लगभग आधा हिस्सा खाड़ी देशों से आता है—सऊदी अरब, कुवैत, इराक, कतर, बहरीन और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों से। लेकिन जब सऊदी अरब पर हमले की खबर आई और दुनिया की सबसे बड़ी तेल कंपनी सऊदी अरामको के प्रतिष्ठानों पर आग भड़क उठी, तब यह स्पष्ट हो गया कि ऊर्जा आपूर्ति की परंपरागत धारा बाधित होने वाली है।

अरामको पर हमला केवल एक औद्योगिक प्रतिष्ठान पर प्रहार नहीं था, बल्कि वैश्विक ऊर्जा तंत्र की रीढ़ पर चोट थी। दुनिया के कई देश, विशेषकर एशियाई अर्थव्यवस्थाएं, सऊदी तेल पर निर्भर हैं। आग की लपटों के साथ ही अंतरराष्ट्रीय बाजारों में घबराहट की लहर दौड़ गई। तेल के फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट्स तेजी से महंगे हुए, शेयर बाजारों में गिरावट आई और ऊर्जा सुरक्षा पर सवाल उठने लगे। ऐसे समय में जब अधिकांश देश हालात को भांपने और प्रतिक्रियात्मक बयान देने में लगे थे, तब भारत और रूस के बीच कूटनीतिक और आर्थिक संपर्क तेज हो गए। रूस पहले भी भारत का बड़ा ऊर्जा साझेदार रह चुका है। यूक्रेन युद्ध के बाद जब पश्चिमी देशों ने रूस पर प्रतिबंध लगाए थे, तब भारत ने व्यावहारिक नीति अपनाते हुए रियायती दरों पर रूसी कच्चा तेल खरीदा था। इससे भारत को महंगाई नियंत्रण में रखने में मदद मिली थी और रूस को अपने तेल के लिए बड़ा बाजार मिला था। हालांकि हाल के महीनों में भारत ने आयात में कुछ विविधता लाने के प्रयास किए थे और सऊदी अरब फिर से भारत का प्रमुख सप्लायर बन गया था। लेकिन पश्चिम एशिया की ताजा उथल-पुथल ने समीकरण बदल दिए। विशेषज्ञों का मानना है कि मौजूदा संकट रूस को फिर से भारत का सबसे बड़ा तेल आपूर्तिकर्ता बना सकता है।

रूस के लिए यह अवसर इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वह एशियाई बाजारों में अपनी पकड़ मजबूत करना चाहता है। यूरोप में मांग घटने और प्रतिबंधों के चलते उसे नए स्थिर ग्राहकों की जरूरत है। भारत जैसे विशाल और बढ़ती अर्थव्यवस्था वाले देश के साथ दीर्घकालिक ऊर्जा समझौते रूस को आर्थिक स्थिरता दे सकते हैं। वहीं भारत के लिए यह कदम रणनीतिक दृष्टि से लाभकारी हो सकता है, क्योंकि रूसी तेल समुद्री मार्गों से भले लंबा रास्ता तय करता हो, पर वह फारस की खाड़ी के भू-राजनीतिक जोखिम से अपेक्षाकृत मुक्त है। इसके अलावा भुगतान प्रणाली, मुद्रा विनिमय और बीमा व्यवस्थाओं में पहले से स्थापित तंत्र इस सहयोग को और सरल बना सकते हैं। इस पूरे घटनाक्रम में एक और पहलू उल्लेखनीय है। अमेरिका द्वारा वेनेजुएला से तेल खरीदने को लेकर भारत पर जो दबाव बनाया जा रहा था, वह फिलहाल पृष्ठभूमि में चला गया है। वैश्विक ऊर्जा संकट के समय में प्राथमिकता स्थिर और सुनिश्चित आपूर्ति की होती है। भारत की नीति परंपरागत रूप से संतुलन और बहुपक्षीय संबंधों पर आधारित रही है। उसने न तो रूस से दूरी बनाई और न ही खाड़ी देशों से संबंध कमजोर किए। लेकिन जब हरमूस का मार्ग अनिश्चितता से घिरा हो, तब व्यावहारिकता ही सर्वोपरि होती है। आर्थिक विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि यदि हरमूस लंबे समय तक बंद रहता है तो केवल तेल ही नहीं, गैस आपूर्ति भी प्रभावित होगी। कतर जैसे देश तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) के बड़े निर्यातक हैं। गैस की कमी से यूरोप और एशिया में बिजली उत्पादन और उद्योग प्रभावित हो सकते हैं। महंगाई की लहर फिर से तेज हो सकती है। ऐसे में भारत-रूस सहयोग केवल द्विपक्षीय व्यापार का मामला नहीं, बल्कि व्यापक ऊर्जा स्थिरता का प्रश्न बन जाता है।

हालांकि यह भी सच है कि रूस से बढ़ता आयात पश्चिमी देशों की नजरों में आएगा। लेकिन भारत की विदेश नीति का मूलमंत्र रणनीतिक स्वायत्तता रहा है। ऊर्जा सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की आर्थिक रीढ़ होती है, और जब वैश्विक हालात अस्थिर हों, तब त्वरित और साहसिक निर्णय ही देश को संकट से बचाते हैं। भारत के रिफाइनरियों ने पहले भी रूसी तेल को प्रोसेस कर अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उत्पाद निर्यात किए हैं, जिससे उसे अतिरिक्त लाभ हुआ है। यह मॉडल फिर सक्रिय हो सकता है। पश्चिम एशिया की जंग ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ऊर्जा और भू-राजनीति एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। एक मिसाइल हमले का असर हजारों किलोमीटर दूर बैठे उपभोक्ताओं की जेब पर पड़ सकता है। हरमूस का जलडमरूमध्य केवल समुद्री मार्ग नहीं, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था की नब्ज है। जब यह नब्ज दबाव में आती है, तब बड़े खिलाड़ी अपनी-अपनी चाल चलते हैं। भारत और रूस की बढ़ती निकटता इसी रणनीतिक शतरंज का हिस्सा है।

आने वाले दिनों में यह देखना होगा कि क्या हरमूस फिर खुलता है, क्या खाड़ी देशों में स्थिरता लौटती है, और क्या तेल बाजार संतुलन पाता है। लेकिन फिलहाल इतना तय है कि जब दुनिया युद्ध की सुर्खियों में उलझी थी, तब ऊर्जा कूटनीति के मोर्चे पर भारत और रूस ने एक नई दिशा तय कर दी है। यह साझेदारी केवल व्यापार नहीं, बल्कि संकट के समय में अवसर पहचानने की क्षमता का उदाहरण है। वैश्विक उथल-पुथल के इस दौर में जिसने ऊर्जा आपूर्ति की डोर थाम ली, वही आने वाले आर्थिक भविष्य की दिशा तय करेगा।

'सैन्य कार्रवाई समाधान नहीं', उमर अब्दुल्ला ने अमेरिका इजराइल पर उठाए तीखे सवाल, कूटनीति पर दिया जोर

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री Omar Abdullah ने अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए United States और Israel द्वारा Iran के खिलाफ की गई सैन्य कार्रवाई को गलत ठहराया है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि किसी भी संप्रभु देश के शीर्ष नेता या प्रमुख व्यक्ति की हत्या को अंतरराष्ट्रीय राजनीति का वैध माध्यम नहीं माना जा सकता। मुख्यमंत्री ने इस संदर्भ में दोहरे मानदंडों पर भी सवाल उठाए और पूछा कि यदि इस प्रकार की कार्रवाई को सही माना जाए तो क्या फिर Russia द्वारा Ukraine के खिलाफ की गई सैन्य कार्रवाई को भी उसी कसौटी पर सही ठहराया जाएगा? उन्होंने यह भी जोड़ा कि भविष्य में यदि कोई अन्य देश, यहां तक कि भारत, इसी तरह का कदम उठाए तो क्या अंतरराष्ट्रीय समुदाय उसे भी जायज मानेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वैश्विक व्यवस्था नियमों और सिद्धांतों पर आधारित होनी चाहिए, न कि ताकत के प्रदर्शन पर। उन्होंने जोर देकर कहा कि अंतरराष्ट्रीय विवादों का समाधान सैन्य हस्तक्षेप से नहीं, बल्कि बातचीत, कूटनीति और बहुपक्षीय संवाद से निकलता है। उनके अनुसार, दुनिया पहले ही कई संघर्षों और युद्धों की त्रासदी देख चुकी है, जिनका सबसे अधिक असर आम नागरिकों पर पड़ता है। इसलिए किसी भी प्रकार की आक्रामक कार्रवाई के दूरगामी परिणामों पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए।

उमर अब्दुल्ला ने यह भी कहा कि पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव का असर केवल संबंधित देशों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका प्रभाव वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा पर पड़ता है। उन्होंने आशंका जताई कि यदि सैन्य कार्रवाई और प्रतिकार की यह श्रृंखला लंबी चली तो इसका असर ऊर्जा आपूर्ति, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और क्षेत्रीय स्थिरता पर पड़ेगा। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से संयम बरतने और तनाव कम करने के प्रयासों को प्राथमिकता देने की अपील की। विदेशों में पढ़ रहे भारतीय छात्रों के संदर्भ में मुख्यमंत्री ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के कई छात्र, जिनमें बड़ी संख्या मेडिकल विद्यार्थियों की है, प्रभावित क्षेत्रों में मौजूद हैं। सरकार लगातार उनके संपर्क में है और उनकी सुरक्षा को लेकर निगरानी रखी जा रही है। उन्होंने बताया कि प्रशासन छात्रों के परिजनों से भी नियमित संवाद कर रहा है ताकि उन्हें स्थिति की सही जानकारी मिलती रहे और अनावश्यक घबराहट न फैले। मुख्यमंत्री ने आश्वस्त किया कि जरूरत पड़ने पर छात्रों को सुरक्षित वापस लाने के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएंगे और इस पूरे मामले से केंद्र सरकार को भी अवगत करा दिया गया है।

कश्मीर घाटी के मौजूदा हालात पर बोलते हुए उमर अब्दुल्ला ने कहा कि कुछ तत्व माहौल खराब करने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। उन्होंने कहा कि संवेदनशील इलाकों में एहतियातन पुलिस बल की तैनाती की गई है और सुरक्षा एजेंसियां स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं। उनके अनुसार फिलहाल प्रदेश के सभी शहरों में शांति है और किसी भी प्रकार की हिंसा या अशांति की खबर नहीं है। उन्होंने लोगों से अपील की कि अफवाहों पर ध्यान न दें और शांति बनाए रखने में प्रशासन का सहयोग करें।

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि जम्मू-कश्मीर ने लंबे समय तक हिंसा और अस्थिरता का दौर देखा है, इसलिए यहां की जनता शांति की कीमत अच्छी तरह समझती है। उन्होंने दोहराया कि सरकार की प्राथमिकता अमन-चैन बनाए रखना और विकास कार्यों को आगे बढ़ाना है। अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का स्थानीय स्तर पर दुष्प्रभाव न पड़े, इसके लिए सभी एहतियाती कदम उठाए जा रहे हैं।

पड़ोसी देशों के बीच जारी तनाव पर प्रतिक्रिया देते हुए उमर अब्दुल्ला ने कहा कि युद्ध किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं होता। उन्होंने विशेष रूप से Pakistan और Afghanistan के बीच बढ़ते तनाव का उल्लेख करते हुए कहा कि दोनों देश पड़ोसी हैं और उन्हें संवाद के माध्यम से ही अपने मतभेद सुलझाने चाहिए। उन्होंने कहा कि संघर्ष का खामियाजा आम जनता को भुगतना पड़ता है—चाहे वह आर्थिक संकट हो, विस्थापन हो या मानवीय त्रासदी।

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि दुनिया के कई हिस्सों में बढ़ते सैन्य टकराव एक खतरनाक प्रवृत्ति की ओर संकेत करते हैं। यदि बड़े देश अपने विवादों को बल प्रयोग से सुलझाने लगें, तो अंतरराष्ट्रीय कानून और संस्थाओं की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लग जाएगा। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र और अन्य वैश्विक मंचों की भूमिका को मजबूत करने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि विवादों का समाधान संस्थागत ढांचे के भीतर हो सके। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि उमर अब्दुल्ला का यह बयान केवल अंतरराष्ट्रीय राजनीति पर टिप्पणी नहीं, बल्कि एक व्यापक संदेश भी है कि कश्मीर जैसे संवेदनशील क्षेत्र में शांति और स्थिरता सर्वोपरि है। वैश्विक तनाव का स्थानीय प्रभाव न पड़े, इसके लिए राजनीतिक नेतृत्व का संतुलित और जिम्मेदार बयान महत्वपूर्ण होता है।

'फांसी घर' समन पर केजरीवाल की मांग: कार्यवाही का सीधा प्रसारण हो, पारदर्शिता से ही सच्चाई सामने आएगी

दिल्ली की राजनीति एक बार फिर उस विवाद के इर्द-गिर्द गरमा गई है, जिसकी शुरुआत लगभग छह वर्ष पहले हुई थी। दिल्ली विधानसभा परिसर में कथित 'फांसी घर' के उद्घाटन से जुड़े मामले में जारी समन पर आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री Arvind Kejriwal ने विधानसभा की विशेषाधिकार समिति के सामने पेश होने की पुष्टि करते हुए कार्यवाही के लाइव प्रसारण की मांग कर दी है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि वह 6 मार्च को दोपहर 3 बजे समिति के समक्ष उपस्थित होंगे, लेकिन पारदर्शिता और सार्वजनिक जवाबदेही के हित में पूरी प्रक्रिया का सीधा प्रसारण होना चाहिए ताकि जनता स्वयं सच्चाई देख और समझ सके।

सोशल मीडिया मंच एक्स पर जारी अपने विस्तृत संदेश में केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली इस समय गंभीर समस्याओं से जूझ रही है। उन्होंने राजधानी में बढ़ते प्रदूषण, टूटी सड़कों, जगह-जगह लगे कूड़े के ढेर और अस्पतालों में दवाइयों की कमी का उल्लेख करते हुए सवाल उठाया कि ऐसे समय में विधानसभा द्वारा उन्हें 'फांसी घर' से जुड़े प्रश्न पर तलब किया जाना किस प्राथमिकता को दर्शाता है। उन्होंने लिखा कि उन्हें विधानसभा के नियमों—रूल 172 और 220—के तहत समन प्राप्त हुआ है और वह कानून का सम्मान करते हुए नियत समय पर उपस्थित होंगे। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि समिति के समक्ष पेश होना उनके किसी भी कानूनी या संवैधानिक अधिकार, आपत्ति या दलील को प्रभावित नहीं करेगा; वे सभी अधिकार सुरक्षित हैं।

यह विवाद अगस्त 2020 से जुड़ा है, जब आम आदमी पार्टी सरकार ने दिल्ली विधानसभा परिसर में एक संरचना को ब्रिटिश काल का 'फांसी घर' बताते हुए उसका उद्घाटन किया था। उस समय सरकार का दावा था कि यह स्थान स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का एक प्रतीक है और इसे संरक्षित कर जनता के सामने लाना ऐतिहासिक जिम्मेदारी है। हालांकि विपक्षी दल Bharatiya Janata Party ने इस दावे पर गंभीर आपत्ति जताई। भाजपा का कहना है कि जिस ढांचे को 'फांसी घर' बताया गया, वह वास्तव में एक पुराना टिफिन रूम था और उसे गलत तरीके से ऐतिहासिक महत्व देकर जनता को भ्रमित किया गया।

भाजपा ने यह भी आरोप लगाया कि उस संरचना के नवीनीकरण पर सरकारी धन का दुरुपयोग हुआ। विपक्ष का कहना है कि ऐतिहासिक तथ्यों की पुष्टि किए बिना एक सामान्य ढांचे को 'फांसी घर' के रूप में प्रस्तुत करना न केवल तथ्यात्मक त्रुटि है, बल्कि राजनीतिक लाभ के लिए इतिहास का इस्तेमाल भी है। इसी पृष्ठभूमि में विधानसभा की विशेषाधिकार समिति ने मामले की जांच शुरू की और केजरीवाल को समन जारी किया गया।

दिल्ली विधानसभा की कार्यवाही और उसके अधिकारों के संदर्भ में विशेषाधिकार समिति की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। यदि किसी सदस्य या बाहरी व्यक्ति पर सदन की गरिमा या विशेषाधिकारों के उल्लंघन का आरोप हो, तो समिति उस पर विचार करती है। केजरीवाल को जारी समन इसी प्रक्रिया का हिस्सा है। हालांकि, उन्होंने अपने पत्र में यह रेखांकित किया है कि उनका समिति के समक्ष उपस्थित होना केवल समन का सम्मान है, न कि किसी आरोप की स्वीकृति। इस पूरे घटनाक्रम ने दिल्ली की राजनीतिक बहस को नई दिशा दे दी है। एक ओर आम आदमी पार्टी इसे राजनीतिक प्रतिशोध करार दे रही है, तो दूसरी ओर भाजपा इसे जवाबदेही का मामला बता रही है। आम आदमी पार्टी के नेताओं का कहना है कि यदि कार्यवाही का सीधा प्रसारण किया जाता है तो जनता को यह समझने में आसानी होगी कि मामला कितना तथ्यात्मक है और कितना राजनीतिक। उनका तर्क है कि पारदर्शिता लोकतंत्र की बुनियाद है और जब आरोप सार्वजनिक हैं तो सुनवाई भी सार्वजनिक होनी चाहिए।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि केजरीवाल की लाइव-स्ट्रीमिंग की मांग रणनीतिक भी हो सकती है। पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने कई बार सार्वजनिक मंचों और सोशल मीडिया के माध्यम से अपने पक्ष को सीधे जनता तक पहुंचाने की रणनीति अपनाई है। यदि समिति की कार्यवाही का सीधा प्रसारण होता है, तो यह न केवल कानूनी प्रक्रिया का प्रसार होगा, बल्कि राजनीतिक संदेश का भी माध्यम बन सकता है। वहीं, विपक्ष का कहना है कि समिति की कार्यवाही सदन के नियमों के अनुसार चलती है और उसे राजनीतिक मंच में बदलना उचित नहीं होगा।

'फांसी घर' विवाद केवल एक संरचना की पहचान का प्रश्न नहीं रह गया है, बल्कि यह इतिहास, राजनीति और प्रशासनिक जवाबदेही के संगम का मुद्दा बन चुका है। यदि यह सिद्ध होता है कि संरचना का ऐतिहासिक स्वरूप गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया, तो यह सरकार की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगा सकता है। वहीं यदि सरकार अपने दावे के समर्थन में पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करती है, तो विपक्ष के आरोप कमजोर पड़ सकते हैं। इस मामले का एक पहलू सार्वजनिक धन के उपयोग से भी जुड़ा है।

सीसीटीवी पारदर्शिता पर सख्त रुख: गुजरात हाई कोर्ट का आदेश, 30 दिन तक फुटेज सुरक्षित रखना अनिवार्य

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। कानून व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए गुजरात उच्च न्यायालय ने राज्य के सभी पुलिस स्टेशनों में सीसीटीवी कैमरे लगाना अनिवार्य कर दिया है। अदालत ने स्पष्ट किया है कि केवल कैमरे लगाना ही पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि उनका कार्यशील रहना भी जरूरी है। जिन पुलिस स्टेशनों में अब तक सीसीटीवी नहीं लगाए गए हैं या लगाए गए होने के बावजूद बंद अवस्था में हैं, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। इस आदेश के बाद राज्य भर में पुलिस महकमे में हलचल तेज हो गई है और व्यवस्था को दुरुस्त करने की कवायद शुरू कर दी गई है। अदालत के निर्देशों के तहत सरकार और गृह विभाग को भी स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए गए थे कि वे इस आदेश का पालन सुनिश्चित करें। न्यायालय का मानना है कि पुलिस स्टेशनों में सीसीटीवी की मौजूदगी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के साथ-साथ पुलिस की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता लाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। पिछले कुछ वर्षों में हिरासत में उत्पीड़न और शिकायतों के मामलों को देखते हुए अदालत ने इसे 'शून्य त्रुटि एजेंसी' की दिशा में अहम कदम बताया है।

इसी क्रम में सूचना के अधिकार के तहत सीसीटीवी फुटेज को लेकर भी एक अहम निर्देश जारी किया गया है। गुजरात राज्य सूचना आयोग ने अपने हालिया आदेश में कहा है कि यदि किसी घटना के 30 दिनों के भीतर आरटीआई आवेदन दाखिल किया जाता है, तो संबंधित सीसीटीवी फुटेज को सुरक्षित रखना अनिवार्य होगा। आयोग ने यह भी स्पष्ट किया है कि यदि मांगी गई फुटेज को जानबूझकर नष्ट किया गया या सुरक्षित नहीं रखा गया, तो संबंधित अधिकारियों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

सूचना आयोग का यह निर्देश उस पृष्ठभूमि में आया है, जब कई मामलों में पुलिस द्वारा आरटीआई के तहत सीसीटीवी फुटेज उपलब्ध नहीं कराई जा रही थी। आयोग के समक्ष प्रस्तुत शिकायतों और अभ्यावेदनों के आधार पर यह पाया गया कि कई बार फुटेज को निर्धारित अवधि से पहले ही डिलीट कर दिया जाता है, जिससे जांच या शिकायतों की निष्पक्षता प्रभावित होती है। आयोग ने स्पष्ट किया कि पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए 30 दिन की न्यूनतम अवधि तक फुटेज सुरक्षित रखना अनिवार्य है।

हाल ही में सूरत शहर के कोटडा पुलिस स्टेशन में सीसीटीवी फुटेज को लेकर एक विवाद सामने आया था। शिकायतकर्ता ने आरटीआई के तहत संबंधित घटना की फुटेज मांगी थी, लेकिन पुलिस ने उसे उपलब्ध नहीं कराया। मामला अंततः सूचना आयोग तक पहुंचा। सुनवाई के दौरान आयोग ने पाया कि फुटेज को सुरक्षित रखने और उपलब्ध कराने के संबंध में सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी परिपत्र का पालन नहीं किया गया था। इसके बाद आयोग ने संबंधित परिपत्र को सख्ती से लागू करने का निर्देश दिया।

सूचना

हमारे सभी पाठकों एवं शुभचिंतकों को सूचित किया जाता है कि 04 मार्च 2026 होली के अवसर पर हमारा कार्यालय बंद रहेगा। अतः 05 मार्च 2026 का अंक प्रकाशित नहीं किया जाएगा।, आगामी अंक 06 मार्च, 2026 शुक्रवार से यथावत अंक प्रकाशित होंगे। सभी को होली की हार्दिक शुभकामना।

-सम्पादक

ऑस्टिन की दर्दनाक रात: टेक्सास गोलीकांड में भारतीय छात्रा की मौत से सदमे में समुदाय

अमेरिका के टेक्सास राज्य की राजधानी ऑस्टिन में हुई एक भीषण गोलीबारी ने भारतीय-अमेरिकी समुदाय को गहरे शोक में डुबो दिया है। वेस्ट सिक्स्थ स्ट्रीट के व्यस्त नाइटलाइफ़ क्षेत्र में स्थित लोकप्रिय बार Buford's Backyard Beer Garden के बाहर देर रात हुई अंधाधुंध फायरिंग में चार लोगों की मौत हो गई, जिनमें 21 वर्षीय भारतीय-अमेरिकी छात्रा सविता शान भी शामिल थीं। यह घटना न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी चिंता का विषय बन गई है, क्योंकि इसकी जांच संभावित आतंकवादी कृत्य के रूप में की जा रही है।

सविता शान, जिनका कानूनी उपनाम षणमुगसुंदरम बताया गया है, University of Texas at Austin की छात्रा थीं और प्रबंधन सूचना प्रणाली तथा अर्थशास्त्र में स्नातक की पढ़ाई कर रही थीं। वह अपनी डिग्री पूरी करने से महज कुछ महीने दूर थीं। विश्वविद्यालय प्रशासन ने उन्हें मेधावी, अनुशासित और नेतृत्व क्षमता से परिपूर्ण छात्रा बताया। विश्वविद्यालय के अध्यक्ष जिम डेविस ने एक बयान में कहा कि सविता "स्नेही माता-पिता की संतान, अनेक मित्रों की विश्वसनीय साथी और दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाने के सपने देखने वाली 'लॉन्गहॉर्न' थीं।" उनका यह कथन परिसर में गूंजते शोक और सम्मान की भावना को दर्शाता है।

घटना रविवार देर रात लगभग 1 बजकर 59 मिनट पर हुई, जब भीड़भाड़ वाले इलाके में अचानक गोलियों की आवाज गूंज उठी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, संदिग्ध हमलावर ने पहले एक एसयूवी वाहन से गोलीबारी शुरू की और फिर राइफल लेकर बाहर निकला। पुलिस को आपातकालीन कॉल मिलते ही कार्रवाई शुरू की गई और लगभग एक मिनट के भीतर हमलावर को ढेर कर दिया गया। संदिग्ध की पहचान 53 वर्षीय डियागा डियान्ये के रूप में हुई है, जो सेनेगल मूल का अमेरिकी नागरिक बताया गया है। पुलिस कार्रवाई में उसकी भी मौत हो गई।

ऑस्टिन पुलिस प्रमुख लिसा डेविस ने प्रेस वार्ता में पुष्टि की कि घटनास्थल पर मारे गए लोगों में 19 वर्षीय राइडर हैरिंगटन और सविता शान शामिल हैं। अन्य दो मृतकों की पहचान की प्रक्रिया जारी है। इस हमले में कुल 14 लोग घायल हुए, जिनमें कई छात्र हैं। कम से कम तीन घायलों की हालत गंभीर बताई गई है। घायल छात्रों में 21 वर्षीय करण भक्ता भी शामिल हैं, जिनके सिर को गोली छूकर निकल गई। चिकित्सकों के अनुसार उनकी स्थिति स्थिर है, परंतु वे अभी भी चिकित्सकीय निगरानी में हैं।

इस सामूहिक गोलीबारी ने टेक्सास के बड़े भारतीय प्रवासी समुदाय को झकझोर दिया है। ऑस्टिन को 'सिलिकॉन हिल्स' के नाम से भी जाना जाता है, जहां बड़ी संख्या में भारतीय मूल के तकनीकी पेशेवर और छात्र रहते हैं। सप्ताहांत में अमेरिका और इज़राइल द्वारा ईरान पर हमलों तथा ईरान की जवाबी कार्रवाई के बाद देशभर में पहले से ही सुरक्षा चिंताएं बढ़ी हुई थीं। ऐसे संवेदनशील माहौल में यह हिंसक घटना और अधिक भयावह प्रतीत हो रही है। हालांकि अब तक किसी स्पष्ट अंतरराष्ट्रीय संबंध की पुष्टि नहीं हुई है, फिर भी जांच एजेंसियां सभी संभावित पहलुओं की पड़ताल कर रही हैं।

हमले की जांच Federal Bureau of Investigation के संयुक्त आतंकवाद कार्य बल के नेतृत्व में की जा रही है। संघीय और स्थानीय एजेंसियां यह पता लगाने का प्रयास कर रही हैं कि क्या हमले के पीछे कोई वैचारिक, नस्लीय या अंतरराष्ट्रीय प्रेरणा थी। पुलिस प्रमुख ने कहा कि प्रारंभिक जांच में हमलावर की गतिविधियों, डिजिटल रिकॉर्ड और संपर्कों की गहन जांच की जा रही है। अधिकारियों ने यह भी स्पष्ट किया कि अभी किसी निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

भारतीय परीक्षा की घड़ी है मध्यपूर्व संघर्ष

भले ही, दुनिया में चौधराहट बनाये रखने और साम्राज्यवादी मंसूबों को पूरा करने के लिए अमेरिका ने इस्राइल के साथ मिलकर ईरान पर युद्ध थोपा हो, मगर इस युद्ध के दूरगामी घातक परिणाम पूरी दुनिया को झेलने होंगे। इस संघर्ष ने पूरे पश्चिमी एशिया को गहरे संकट में डाल दिया है। तबाही के कगार पर खड़े ईरान ने जिस तरह अपने पड़ोसी देशों के व्यापारिक व औद्योगिक संस्थानों पर ताबड़-तोड़ हमले किए हैं, उससे मध्यपूर्व में बड़ा आर्थिक संकट पैदा हो गया है। लाखों लोगों के रोजगार पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। खासकर लाखों भारतीय कामगारों के लिये बड़ा संकट पैदा हो गया है। ईरान की जवाबी कार्रवाई से पश्चिमी एशिया में बढ़ते संकट से, इस क्षेत्र में आर्थिक उथल-पुथल मची हुई है। दुनिया के प्रमुख वैश्विक जहाजरानी मार्गों पर मंडरा रहे खतरे के बीच ऊर्जा बाजार की स्थिति पर गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है। होर्मुज जलडमरूमध्य के पास हुए हमलों के कारण कच्चे तेल और द्रवीकृत प्राकृतिक गैस यानी एलएनजी की ढुलाई पहले ही बाधित हो चुकी है। उल्लेखनीय है कि होर्मुज जलडमरूमध्य वैश्विक तेल आपूर्ति के लगभग पांचवें हिस्से के लिये एक रणनीतिक मार्ग है। लेकिन मौजूदा युद्ध से उपजे हालात में जहाज बीमा कंपनियों ने युद्ध-जोखिम कवरेज वापस ले लिया है। इसके चलते पेट्रोलियम पदार्थों व अन्य उत्पादों की माल ढुलाई लागत बढ़ रही है। युद्ध की विभीषिका के चलते तमाम जहाजों ने अपने मार्ग बदल लिए हैं। कुछ जहाज चलाने वाली कंपनियों ने अपने जहाजों के परिचालन पर रोक लगा दी है। इसका तात्कालिक परिणाम यह है कि कच्चे तेल की कीमतों में काफी उछाल देखा जा रहा है। जिसके चलते ब्रेंट क्रूड की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि देखी जा रही है। इसमें दो राय नहीं कि कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें आने वाले दिनों में विश्व स्तर पर मुद्रास्फीति के दबाव को बढ़ाएंगी। जाहिरा तौर पर विकासशील व गरीब देशों का आर्थिक संकट और गहरा हो जाएगा। वहीं दूसरी ओर विकासशील देशों की सरकारों के सामने विकास कार्यक्रमों के लिये वित्तीय संसाधन जुटाना अब एक बड़ी चुनौती होगी। वहीं इन देशों में केंद्रीय बैंकों के लिये भी मुद्रास्फीति और विकास के बीच संतुलन बनाये रखना मुश्किल हो जाएगा। दरअसल, हाल के दिनों में पेट्रोलियम और उसके उत्पादों पर निर्भर परिवहन, रसायन और प्लास्टिक उद्योग तक को बढ़ती लागत का सामना करना पड़ रहा है। जाहिर है इससे इन उद्योगों के लाभ में कमी आ सकती है। साथ ही इन उद्योगों में निवेश धीमा हो सकता है। वहीं दूसरी ओर आपूर्ति में देरी से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की समस्याएं और भी बढ़ सकती हैं। यह सर्वविदित है कि आज भी भारत अपनी घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिये कच्चे तेल का अस्सी से नब्बे प्रतिशत आयात करता है। इस कच्चे तेल का करीब चालीस फीसदी हिस्सा पश्चिमी एशिया से आता है। मौजूदा विषम परिस्थितियों के बीच होर्मुज जलमार्ग में व्यवधान तथा भू-राजनीतिक जोखिमों में वृद्धि से भारत के तेल आयात बिल के बढ़ने की आशंका बढ़ गई है। वहीं इसके साथ ही देश का राजकोषीय घाटा भी बढ़ सकता है। यहां तक कि कच्चे तेल के दाम में दस डॉलर प्रति बैरल की वृद्धि भी आयात लागत को काफी हद तक बढ़ा सकती है। मौजूद संकट के बीच, विशेष रूप से खाड़ी क्षेत्र को निर्यात के लिये बने व्यापार गलियारे आज जटिल परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर होर्मुज जलमार्ग और आगे के माल ढुलाई नेटवर्क के माध्यम से शिपिंग पर निर्भर इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य वस्तुओं के निर्यात में देरी से लागत के बढ़ने की आशंका है। साथ ही अवसरों के नुकसान होने का खतरा बढ़ रहा है। यूं तो भारत सरकार आत्मविश्वास से भरी नजर आती है, लेकिन यदि पश्चिम एशिया का संघर्ष लंबा चलता है, तो हालात आर्थिक चुनौतियों को काफी हद तक बढ़ा सकते हैं। इस संकट से निपटने के लिए त्वरित नीतिगत प्रतिक्रिया की जरूरत है। वक्त की मांग है कि लगातार विषम होती परिस्थितियों के बीच ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण किया जाये। वहीं दूसरी ओर अस्थिरता से बचाव के लिये तत्काल मजबूत आर्थिक सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होगी।

निर्यात बढ़ाने को जरूरी खास रणनीतिक उपाय

> "ईरान व इस्राइल-अमेरिका के बीच युद्ध से भारत के सामने निर्यात घटने और व्यापार घाटा बढ़ने की चुनौती खड़ी हो गई है। ऐसे में सरकार द्वारा निर्यातकों को विशेष सहयोग व प्रोत्साहन जरूरी है। वहीं व्यापार समझौतों के क्रियान्वयन की गति बढ़ानी होगी।

ईरान और इस्राइल-अमेरिका के बीच युद्ध से निर्मित हालात से भारतीय निर्यात पर पड़ने वाले प्रभाव पर संबंधित मंत्रालयों, निर्यातक संगठनों और शिपिंग कंपनियों द्वारा जारी विचार मंथन में दो अहम बातें सामने आ रही हैं। एक, इस युद्ध से भारत के सामने निर्यात घटने और व्यापार घाटा बढ़ने की नई चुनौती खड़ी हो गई है। दो, युद्ध के दौर में सरकार द्वारा निर्यातकों को हरसंभव सहयोग- प्रोत्साहन, व्यापार समझौतों के क्रियान्वयन और सुधारों की डगर पर आगे बढ़ना होगा।

उल्लेखनीय है कि भारत के लिए अमेरिका, इस्राइल और ईरान तीनों ही निर्यात के अहम बाजार हैं, ऐसे में न केवल इन तीनों देशों में, बल्कि युद्ध प्रभावित पश्चिम एशियाई और यूरोपीय देशों में भी भारत से होने वाले निर्यात प्रभावित होंगे। विभिन्न देशों में भारत से निर्यात होने वाले खाद्य उत्पाद, टेक्सटाइल, इंजीनियरिंग सामान, बासमती चावल, चाय, मशीनरी, फार्मास्युटिकल्स, रत्न-आभूषण, प्लास्टिक और रबर जैसे क्षेत्रों में निर्यात प्रभावित हो सकते हैं।

युद्ध के बीच ईरान द्वारा दुनिया के सबसे अहम तेलमार्ग होर्मुज स्ट्रेट बंद किए जाने से विभिन्न देशों के बाजारों में माल ढुलाई और बीमा प्रीमियम की लागत बढ़ने से भी भारतीय निर्यात प्रभावित हो सकते हैं। इतना ही नहीं, युद्ध के कारण सोने-चांदी की कीमतों में भारी उछाल से इनके आयात के बढ़े हुए मूल्य के कारण भारत का व्यापार घाटा और बढ़ता नजर आ सकता है। ऐसे में अब युद्ध के कारण निर्यात घटने और व्यापार घाटा बढ़ने की नई चुनौती के मद्देनजर भारत द्वारा निर्यात बढ़ाने व व्यापार घाटा

नियंत्रित रखने को रणनीतिक कदमों के साथ आगे बढ़ना जरूरी है।

इसके मद्देनजर चार महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना होगा। पहला, भारत द्वारा विभिन्न देशों के साथ किए गए द्विपक्षीय और मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) के तहत तेजी से कारोबार और निर्यात बढ़ाने के लिए रणनीतिक कदम आगे बढ़ाना। दूसरा, व्यापार समझौतों का पूरा लाभ उठाने के लिए देश में गुणवत्तापूर्ण उत्पादन और नए सुधारों पर ध्यान केंद्रित करना। तीसरा, निर्यात के नए बाजारों में प्रवेश करना। चौथा, आगामी वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए हाल में पेश केंद्रीय बजट के तहत घोषित निर्यात प्रोत्साहनों के क्रियान्वयन पर नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत से ही ध्यान दिया जाना।

गौरतलब है कि भारत द्वारा कई देशों के साथ जो एफटीए किए गए हैं, उन्हें शीघ्रता से क्रियान्वयन की डगर पर आगे बढ़ाना होगा। इनमें 27 जनवरी को भारत-यूरोपीय संघ (ईयू) के शिखर सम्मेलन के दौरान घोषित एफटीए सबसे महत्वपूर्ण है। यह एफटीए दुनिया की दो बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच तालमेल का शानदार उदाहरण है और भारत के लिए अत्यधिक लाभप्रद है। इस समझौते को सभी व्यापार समझौतों की जननी यानी मदर ऑफ ऑल ट्रेड डील्स कहते हुए रेखांकित किया गया है कि दुनिया के वर्तमान 'ग्रोथ सेंटर' और इस सदी के आर्थिक पॉवर हाउस भारत के साथ यह एफटीए यूरोप को दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते आर्थिक क्षेत्रों में पहली बढ़त दिलाएगा।

पिछले वर्ष 2025 में भारत द्वारा ब्रिटेन, ओमान और न्यूजीलैंड के साथ किए गए एफटीए का वर्ष 2026 में कार्यान्वयन अहम होगा। इन सबके साथ-साथ मॉरीशस, संयुक्त अरब अमीरात, ऑस्ट्रेलिया और चार यूरोपीय देशों आइसलैंड, स्विट्ज़रलैंड, नॉर्वे और लिकटेंस्टीन के समूह यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन (एफ्टा) के साथ कार्यान्वित हो रहे एफटीए के और अधिक लाभ मिलते हुए दिखाई देंगे। साथ ही इस वर्ष पेरू, चिली, आसियान, मैक्सिको, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, इस्राइल, भारत गल्फ कंट्रीज काउंसिल सहित अन्य प्रमुख देशों के साथ भी नए एफटीए को आकार देने की पहल की जानी होगी।

ईरान और इस्राइल-अमेरिका युद्ध के बीच भारत से निर्यात बढ़ाना कोई सरल काम नहीं। ऐसे में भारत द्वारा निर्यात बढ़ाने के लिए चिन्हित किए गए करीब 200 देशों में निर्यात की नई रणनीति के साथ आगे बढ़ना होगा। एक फरवरी को वित्तमंत्री द्वारा पेश केंद्रीय बजट 2026-27 में विनिर्माण, वस्त्र, चमड़ा और समुद्री भोजन जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए निर्यात बढ़ाने के लिए जो कई रणनीतिक उपाय किए गए हैं, उन पर नए वित्तीय वर्ष में शुरुआत से ध्यान देना होगा।

निःसंदेह, इस समय वैश्विक व्यापार और वैश्विक निर्यात में कमी की चुनौतियां सामने खड़ी है, तब भारत से निर्यात बढ़ाने के मद्देनजर निर्यातकों की दिक्कतों को कम करना होगा। ये दिक्कतें केवल शुल्क वृद्धि तक सीमित नहीं वरन एंटी-डंपिंग शुल्क से भी संबंधित हैं। घरेलू कच्चे माल की ऊंची लागत और ईंधन की उच्च कीमतों के कारण भी भारत द्वारा निर्यात किए जाने वाले उत्पाद वैश्विक स्तर से करीब 15-20 फीसदी की अधिक लागत पर दिखाई देते हैं। निर्यात बढ़ाने के लिए राज्यों में मान्यताप्राप्त आधुनिक प्रयोगशालाएं भी जरूरी हैं।

घरेलू ढांचागत सुधारों के प्रति भी नए सिरे से प्रतिबद्धता आवश्यक होगी। इस हेतु देश में नियमों और नियामक संस्थाओं के कामकाज में मूलभूत बदलाव की जरूरत है। कर सुधारों को और गहराई देने के साथ जीएसटी प्रणाली को प्रभावी बनाया जाये। सिस्टमैटिक्स ग्रुप की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत द्वारा व्यापार समझौतों का अधिकतम लाभ लेने के लिए घरेलू कंपनियों को गुणवता, तकनीक और कुशल कर्मियों के साथ आगे बढ़ना होगा। हमें घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मक ताकत बढ़ाने, एफटीए के लिए जागरूकता में इजाफे, गैर-टैरिफ बाधाएं दूर करने, सेवा क्षेत्र का लाभ उठाने, निर्यात में विविधता, कृषि और संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा करने के साथ-साथ, पर्यावरण और श्रम मानकों के परिपालन पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

प्रेरणा

सत्य के पथ पर अडिग रहने का साहस

उन्नीसवीं शताब्दी के अमेरिका में एक ऐसा विचारक जन्मा जिसने यह सिद्ध कर दिया कि सत्य के साथ खड़े होने के लिए किसी सेना, किसी पद या किसी सत्ता की आवश्यकता नहीं होती। उसका नाम था Henry David Thoreau। वह न तो कोई बड़े पद पर आसीन राजनेता थे और न ही किसी आंदोलन के मुखिया, परंतु उनके भीतर सत्य के प्रति जो अटूट निष्ठा थी, वही उन्हें युगों-युगों तक स्मरणीय बना गई। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि साहस बाहरी शक्ति से नहीं, बल्कि भीतर के नैतिक विश्वास से जन्म लेता है।

यह घटना उस समय की है जब अमेरिका में दासप्रथा और अन्यायपूर्ण नीतियों को लेकर समाज में गहरी असमानता व्याप्त थी। सरकार द्वारा लगाए गए कर का एक हिस्सा ऐसे कार्यों में प्रयुक्त हो रहा था जिनसे थोरौ का अंतःकरण सहमत नहीं था। उनका मानना था कि यदि शासन अन्याय कर रहा है, तो नागरिक का कर्तव्य है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से उसका विरोध करे। उन्होंने कर देने से इंकार कर दिया। परिणामस्वरूप उन्हें कारागार में डाल दिया गया। यह कोई बहुत लंबी कैद नहीं थी, परंतु उसका संदेश बहुत गहरा था।

रात को जब उनका एक मित्र उनसे मिलने जेल पहुंचा, तो उसने दुखी होकर कहा कि एक विद्वान, एक चिंतक का स्थान कारागार नहीं है। उसने सुझाव दिया कि थोड़ी-सी औपचारिकता निभाकर कर दे देना चाहिए था, ताकि यह स्थिति उत्पन्न ही न होती। तब थोरौ ने शांत मुस्कान के साथ जो उत्तर दिया, वह इतिहास में अमर हो गया। उन्होंने कहा कि यदि वे अन्याय को स्वीकार कर लेते, तो बाहर रहकर भी भीतर से कैदी बने रहते। उनके लिए जेल की दीवारें उतनी भयावह नहीं थीं, जितना अपने सिद्धांतों से समझौता करना।

यह प्रसंग केवल एक व्यक्ति की जिद या अहंकार का उदाहरण नहीं था, बल्कि यह नैतिक साहस का परिचायक था। अक्सर लोग यह सोचते हैं कि एक व्यक्ति के विरोध से क्या परिवर्तन हो सकता है। परंतु इतिहास गवाह है कि बड़े बदलावों की शुरुआत हमेशा एक अकेली आवाज से हुई है। जब कोई व्यक्ति सत्य के साथ खड़ा होता है, तो वह दूसरों के भीतर भी वही साहस जगाता है। थोरौ का यही विचार आगे चलकर "सिविल नाफरमानी" के सिद्धांत के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उनकी पुस्तक 'सिविल डिसओबीडिएंस' ने विश्वभर के अनेक नेताओं और आंदोलनों को प्रेरित किया।

सत्य के प्रति यह निष्ठा हमें भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की भी याद दिलाती है। जब Mahatma Gandhi ने अन्यायपूर्ण कानूनों के विरुद्ध सत्याग्रह का मार्ग अपनाया, तो उनके पीछे भी यही विचार था कि अन्याय का सहयोग करना स्वयं अन्याय में भागीदार होना है। गांधीजी ने स्वयं स्वीकार किया था कि थोरौ के विचारों से उन्हें प्रेरणा मिली। इस प्रकार एक व्यक्ति का शांतिपूर्ण विरोध विश्व के दूसरे कोने में स्वतंत्रता की लौ बन गया।

सत्य के मार्ग पर चलना सरल नहीं होता। इसमें अकेलापन भी आता है और विरोध भी सहना पड़ता है। समाज प्रायः परंपराओं और प्रचलित मान्यताओं के अनुसार चलता है। जो व्यक्ति उन मान्यताओं पर प्रश्न उठाता है, उसे पहले अस्वीकार किया जाता है। परंतु यदि उसका आधार सत्य और नैतिकता है, तो अंततः वही विचार समाज को नई दिशा देता है। थोरौ ने जेल जाने का जोखिम उठाया, क्योंकि वे जानते थे कि नैतिक स्वतंत्रता बाहरी स्वतंत्रता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

यहां यह प्रश्न उठता है कि साहस क्या है? क्या साहस केवल शारीरिक वीरता है, या फिर यह आत्मिक दृढ़ता भी है? थोरौ का जीवन बताता है कि सच्चा साहस वह है जो व्यक्ति को भीड़ से अलग खड़े होने की शक्ति दे। जब सभी लोग किसी अन्याय को सामान्य मानकर स्वीकार कर लेते हैं, तब जो व्यक्ति उसका विरोध करता है, वही असली साहसी कहलाता है। यह साहस भीतर के विवेक से जन्म लेता है। यदि अंतःकरण जागृत है, तो व्यक्ति किसी भी कठिनाई का सामना कर सकता है।

अगले दिन जब थोरौ जेल से रिहा हुए, तो लोगों ने उनसे पूछा कि क्या उन्हें डर नहीं लगा। उनका उत्तर अत्यंत सरल था—डर जेल में नहीं था, डर तो अन्याय से समझौता करने में था। यह वाक्य केवल शब्द नहीं थे, बल्कि जीवन-दर्शन था। हम अक्सर बाहरी परिस्थितियों से डरते हैं—आलोचना से, असफलता से, सामाजिक बहिष्कार से। परंतु सबसे बड़ा भय अपने मूल्यों को खो देने का होना चाहिए। जब व्यक्ति अपने सिद्धांतों से समझौता कर लेता है, तब वह बाहरी रूप से भले ही स्वतंत्र दिखे, पर भीतर से बंध जाता है।

आज के समय में भी यह संदेश उतना ही प्रासंगिक है। आधुनिक समाज में अनेक प्रकार के दबाव हैं—आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक। लोग सुविधा और सुरक्षा के लिए कई बार ऐसे निर्णय ले लेते हैं जो उनके अंतःकरण के विरुद्ध होते हैं। परंतु यदि हम थोरौ की सीख को याद रखें, तो समझ में आता है कि अल्पकालिक सुविधा के लिए सत्य का त्याग दीर्घकालिक आत्मग्लानि का कारण बन सकता है।

सत्य के साथ खड़े होने का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति आक्रामक हो जाए या हिंसा का मार्ग अपनाए। थोरौ ने शांतिपूर्ण असहयोग को चुना। उन्होंने किसी के प्रति घृणा नहीं दिखाई, केवल अन्यायपूर्ण व्यवस्था का समर्थन करने से इंकार किया। यही नैतिक शक्ति की पहचान है। जब विरोध में भी करुणा और संयम हो, तब वह अधिक प्रभावी बन जाता है।

उनका जीवन हमें यह भी सिखाता है कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक अधिकार नहीं, बल्कि आत्मिक अवस्था है। यदि मन स्वतंत्र है, तो बाहरी बंधन भी व्यक्ति को पराजित नहीं कर सकते। परंतु यदि मन ही भय और समझौते से जकड़ा हो, तो बाहरी स्वतंत्रता भी निरर्थक हो जाती है। थोरौ ने यह सिद्ध कर दिया कि एक जागृत अंतःकरण समूचे समाज को दिशा दे सकता है।

अंततः यह कथा हमें अपने भीतर झांकने का अवसर देती है। हम कितनी बार सुविधा के लिए सत्य से समझौता कर लेते हैं? कितनी बार हम यह सोचकर चुप रह जाते हैं कि अकेले हमारे बोलने से क्या फर्क पड़ेगा? परंतु यदि हर व्यक्ति यही सोचता रहे, तो परिवर्तन कभी संभव नहीं होगा। जब एक व्यक्ति साहस करता है, तो वह दूसरों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

सत्य के लिए अकेला खड़ा होना कठिन है, परंतु वही वास्तविक स्वतंत्रता का आरंभ है। थोरौ का जीवन एक दीपक की तरह है, जो यह दिखाता है कि सिद्धांतों पर अडिग रहने वाला व्यक्ति ही समाज में नैतिक क्रांति की शुरुआत करता है। उनकी यह सीख आज भी उतनी ही जीवंत है—अन्याय के साथ समझौता मत करो, क्योंकि सच्ची कैद बाहर की दीवारों में नहीं, बल्कि भीतर के भय में होती है। जब हम उस भय को जीत लेते हैं, तभी हम वास्तव में स्वतंत्र हो पाते हैं।

समरसता की अनुभूति कराता है होली का पर्व

भारत उत्सवों की भूमि है, तीज-त्योहारों की पावन धरा है। किसी समाज में पर्वों की निरंतरता उसकी सांस्कृतिक समृद्धि और सामूहिक उल्लास का संकेत मानी जाती है। होली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारत की धड़कनों में गूँजता समरसता का संगीत है। यह मुख्यतः फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाई जाती है। वैदिक काल में इसे नवात्रैष्टि यज्ञ कहा गया, जहाँ खेत के अधपके अन्न को अग्नि में अर्पित कर प्रसाद रूप में ग्रहण किया जाता था। अन्न को "होला" कहा जाता था, इसी से "होलिकोत्सव" नाम प्रचलित हुआ। भारतीय ज्योतिष के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नववर्ष का आरंभ माना जाता है, और होली के पश्चात ही चैत्र मास का प्रवेश होता है। इस दृष्टि से होली केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि समय के परिवर्तन का सूचक है—वसंत की आहट और नवसंवत के स्वागत का प्रतीक। इसी तिथि को मन्वादितिथि भी कहा गया है, क्योंकि मान्यता है कि प्रथम पुरुष मनु का प्राकट्य इसी दिन हुआ था। मनु को मानव सभ्यता और सामाजिक व्यवस्था का आदिप्रवर्तक माना जाता है। इसलिए यह दिन केवल ऋतु परिवर्तन का संकेत नहीं, बल्कि मानवीय चेतना और सांस्कृतिक आरंभ का भी प्रतीक बन जाता है—एक ऐसी शुरुआत, जिसमें व्यवस्था, नैतिकता और जीवन-दर्शन के बीज निहित हैं। फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन और अगले दिन धुलेंडी पर रंगोत्सव—यह केवल रंगों का उन्माद नहीं, बल्कि एक ऐसा संवाद है, जिसमें अतीत की राख से भविष्य के रंग जन्म लेते हैं।

होली का दार्शनिक आधार भारतीय चेतना की गहराइयों में निहित है। प्रह्लाद की अटूट श्रद्धा और होलिका के दहन की कथा केवल पौराणिक आख्यान नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर चलने वाले सत्य और असत्य के संघर्ष का रूपक है। जब हिरण्यकशिपु का अहंकार अग्नि में भस्म होता है, तब यह केवल एक पात्र का अंत नहीं, बल्कि अन्याय, दंभ और विभाजनकारी मानसिकता का अंत है। जब तक भीतर की असमानता नहीं जलेगी, बाहर की समरसता अधूरी रहेगी। और फिर अगली सुबह, जब रंग चेहरे पर लगते हैं, पर असर मन पर होता है। उस क्षण न कोई ऊँच-नीच का प्रश्न रह जाता है, न अमीर-गरीब का अंतर। रंग सबको एक-सा बना देते हैं—एक ही हँसी, एक ही उमंग, एक ही स्पर्श। यह दृश्य बताता है कि विविधता विरोध नहीं, सौंदर्य है। जैसे अनेक रंग मिलकर इंद्रधनुष रचते हैं, वैसे ही विभिन्न समुदाय मिलकर राष्ट्र की आत्मा को पूर्ण बनाते हैं।

भारत के कोने-कोने में होली के रूप भिन्न हैं, पर भाव एक है। ब्रज मंडल में होली बसंत पंचमी से शुरू होकर रंगभरनी एकादशी के बाद चरम पर पहुँचती है। लड्डूमार से लट्ठमार तक अनोखे उत्सव मनते हैं और देश-विदेश से लोग ब्रज पहुँचते हैं। बरसाने की लट्ठमार होली में हँसी सचमुच हवा में घुली रहती है। गलियों में उड़ता गुलाल, छतों पर खिलखिलाहट और चौक की ठिठोली से पूरा ब्रज मुस्कुराता दिखता है। सजी महिलाएँ लाठियाँ थामे बढ़ती हैं, पुरुष ढाल सँभाले शरारती अंदाज़ में बचते हैं। यह सब किसी संघर्ष का नहीं, प्रेम की मीठी नोक-झोंक का उत्सव है।

इस हँसी-ठिठोली के बीच परंपरा केवल निभाई नहीं जाती, बल्कि उल्लास के साथ जी जाती है। ऊपर से दृश्य चंचल दिखता है, पर भीतर गहरी सांस्कृतिक स्मृति धड़कती है। यह राधा–कृष्ण की आनंदमयी लीलाओं का स्मरण कराती है, जहाँ रूठना-मनाना भी प्रेम का ही एक रंग है। यहाँ स्त्री उत्सव की केंद्र-बिंदु बनकर उभरती है; उसकी सक्रियता शक्ति और स्नेह के सुंदर संतुलन का प्रतीक बनती है—एक ऐसा संतुलन, जिसमें हास्य भी है, सम्मान भी, और अपनापन भी। वहीं वृंदावन की फूलों की होली में जब रंगों के स्थान पर पुष्प बरसते हैं, तो वातावरण मानो सुगंधित भक्ति से भर उठता है। ब्रज की होली वस्तुतः अद्वैत का उत्सव है—जहाँ बाहरी रंग भीतर की चेतना को रंग देते हैं।

ढोलक और मंजीरे की थाप पर गूँजते रसिया गीत होली के इस उत्सव की आत्मा हैं —
"आज बिरज में होरी रे रसिया, कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, राधा के हाथ कमोरी रे रसिया"

इन स्वरों में नोक-झोंक, भक्ति और हास्य एक साथ बहते हैं।

पूर्वांचल के फगुआ में लोकधुनें गूँजती हैं—
"होली खेले रघुवीरा अवध में,
होली खेले रघुवीरा.."

इन गीतों में केवल उल्लास नहीं, लोकजीवन की साझी संवेदना है।

होली के पकवान भी जैसे समरसता का स्वाद हैं। गुजिया की मिठास, दही बड़े की कोमलता, मालपुए की सुगंध और ठंडाई की शीतलता—ये सब केवल व्यंजन नहीं, बल्कि साझा संस्कृति की थाली हैं। इस पर्व की सबसे बड़ी शक्ति यही है कि यह सामाजिक दीवारों को नरम कर देता है और हमें याद दिलाता है कि यदि एक दिन के लिए हम भेद भूल सकते हैं, तो सदा के लिए क्यों नहीं? रंग केवल बाहरी पदार्थ नहीं, बल्कि भावनाओं के प्रतीक हैं। लाल प्रेम का, पीला आशा का, हरा नवजीवन का, नीला विश्वास का। वे हमें सिखाते हैं कि जीवन श्वेत-श्याम नहीं; उसमें अनेक स्वर और छायाएँ हैं। यदि हम केवल अपने ही रंग को सर्वोच्च मानेंगे, तो संघर्ष जन्म लेगा; पर यदि हम सब रंगों को स्वीकार करेंगे, तो एक अद्भुत चित्र बनेगा—समरसता का चित्र। आज जब समाज विचारों और पहचानों से बँटने की आशंका में है, होली हमें संदेश देती है—मनभेद छोड़ो, क्षमा करो, गले मिलो। यह पुनर्मिलन का संस्कार है।

अभियान

गौरांग की करुणा-क्रांति: प्रेम, नाम और समरसता से जगत का आलोक

भारतीय आध्यात्मिक इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हैं जिनकी उपस्थिति केवल एक युग की घटना नहीं, बल्कि चेतना का महोत्सव बन जाती है। Chaitanya Mahaprabhu इसी महोत्सव के उज्ज्वल केंद्र हैं। फाल्गुन पूर्णिमा, सन् 1486 ईस्वी को नादिया जनपद के मायापुर में जन्मे इस दिव्य बालक ने आगे चलकर प्रेम-भक्ति को जन-जन की भाषा बना दिया। पिता जगन्नाथ मिश्र और माता शची देवी के घर जन्मे निमाई—जो नीम के वृक्ष के नीचे जन्म लेने के कारण यह नाम पाए—अपने गौरवर्ण, तेजस्वी मुख और असाधारण मेधा के कारण शीघ्र ही नवद्वीप की पहचान बन गए। किंतु उनके जीवन का वास्तविक चमत्कार ज्ञान की चमक से आगे, हृदय की करुणा में प्रकट हुआ।

युवा निमाई की ख्याति तर्क और व्याकरण के अप्रतिम पंडित के रूप में थी। वे शास्त्रार्थ में अजेय माने जाते थे और विद्वानों के बीच सम्मानित थे। परंतु विद्वत्ता की यह ऊँचाई उन्हें अंतःशांति नहीं दे पा रही थी। गया धाम की यात्रा उनके जीवन का निर्णायक मोड़ बनी। वहीं उनकी भेंट वैष्णव संत Ishvara Puri से हुई, जिन्होंने उन्हें कृष्ण-नाम की दीक्षा दी। उस क्षण से निमाई के भीतर प्रेम की ऐसी धारा फूटी कि उनकी विद्वता भक्ति के माधुर्य में विलीन हो गई। वे तर्क-वितर्क से हटकर हरिनाम के रस में डूबने लगे। यह परिवर्तन केवल व्यक्तित्व का नहीं, उद्देश्य का था—अब उनका जीवन जन-जन में कृष्ण-प्रेम जगाने के लिए समर्पित था।

गृहस्थ जीवन का अध्याय भी उनकी लीला का एक करुण पक्ष है। किशोरावस्था में लक्ष्मीप्रिया से विवाह हुआ, पर शीघ्र ही उनका देहावसान हो गया। पश्चात् विष्णुप्रिया से विवाह हुआ, जो पतिव्रता और साध्वी थीं। किंतु निमाई के भीतर का वैराग्य प्रबल हो चुका था। चौबीस वर्ष की आयु में उन्होंने संन्यास लेने का निश्चय किया। Keshava Bharati से संन्यास लेकर वे 'कृष्ण चैतन्य' कहलाए। यह त्याग केवल घर-परिवार का नहीं, बल्कि व्यक्तिगत सुखों का भी था—अब वे स्वयं को हरिनाम की विश्वयात्रा के लिए अर्पित कर चुके थे।

गौड़ीय वैष्णव परंपरा में चैतन्य महाप्रभु को श्रीकृष्ण का ऐसा अवतार माना जाता है, जो राधा-भाव और राधा-कांति से संयुक्त होकर अवतीर्ण हुआ। इस सिद्धांत को 'अचिन्त्य भेदाभेद' दर्शन में अभिव्यक्त किया गया—जीव और ब्रह्म का संबंध न पूर्ण भिन्न है, न पूर्ण अभिन्न; वह प्रेम के अनुभव में समझ आता है। महाप्रभु का संकीर्तन इसी अनुभव की अभिव्यक्ति था। जब वे "हरे कृष्ण" नाम का उच्चारण करते, तो नेत्रों से अश्रुधारा बहती, देह पुलकित हो उठती और वातावरण द्रवित हो जाता। उनके लिए नाम केवल ध्वनि नहीं, स्वयं भगवान की साकार उपस्थिति था।

संन्यास के बाद उन्होंने व्यापक पदयात्राएँ कीं—नवद्वीप से पुरी, दक्षिण भारत से वृन्दावन तक। पुरी में जगन्नाथ मंदिर के सान्निध्य में उनका दीर्घ प्रवास रहा, जहाँ वे प्रेम-विह्वल होकर कीर्तन करते। विद्वानों के साथ उनके संवाद भी उल्लेखनीय हैं। अद्वैत वेदान्ती आचार्य Sarvabhauma Bhattacharya प्रारंभ में उनके भाव-प्रवाह को केवल भावुकता मानते थे, पर महाप्रभु की तर्क-समर्थित भक्ति और करुणा से प्रभावित होकर स्वयं कृष्ण-भक्ति में प्रवृत्त हुए। इसी प्रकार Prakasananda Saraswati जैसे संन्यासी भी उनके प्रेम और सरलता के आगे नतमस्तक हुए। यह विजय शास्त्रार्थ की नहीं, हृदय की थी।

वृन्दावन के पुनरुद्धार में उनका योगदान ऐतिहासिक है। उन्होंने अपने छह प्रमुख शिष्यों—Rupa Goswami, Sanatana Goswami, Jiva Goswami, Raghunatha Dasa Goswami, Raghunatha Bhatta Goswami और Gopala Bhatta Goswami—को वृन्दावन भेजा। इन षड्गोस्वामियों ने प्राचीन लीलास्थलों की खोज की, भव्य देवालय स्थापित किए और वैष्णव साहित्य की रचना कर भक्ति-दर्शन को व्यवस्थित स्वरूप दिया। उनके प्रयासों से वृन्दावन पुनः आध्यात्मिक चेतना का धाम बना, जहाँ आज भी भक्तों को शांति और रस की अनुभूति होती है।

चैतन्य महाप्रभु की भक्ति केवल व्यक्तिगत मुक्ति का मार्ग नहीं थी; वह सामाजिक समरसता की क्रांति भी थी। उस समय समाज जाति और ऊँच-नीच की दीवारों में बँधा था। महाप्रभु ने हरिनाम संकीर्तन को सबके लिए सुलभ बनाया। उनके कीर्तन में ब्राह्मण और शूद्र, स्त्री और पुरुष, धनी और निर्धन—सभी एक साथ खड़े होकर नाम जपते। उन्होंने स्पष्ट कहा कि हर जीव भगवान का अंश है, इसलिए किसी में भी हीनता का भाव नहीं होना चाहिए। यह दृष्टिकोण उस युग में अत्यंत प्रगतिशील और क्रांतिकारी था।

उनकी आध्यात्मिक अनुभूतियाँ विलक्षण थीं। कृष्ण-विरह में वे कभी-कभी अचेत हो जाते, शरीर पर प्रेम के चिह्न प्रकट होते, और वे राधा-भाव में डूब जाते। यह अवस्था साधारण भावुकता नहीं, बल्कि दिव्य प्रेम की चरम अभिव्यक्ति थी। उनके निकटवर्ती भक्तों ने इसे भगवान के साथ आत्मिक मिलन की अनुभूति माना। पुरी में उनके अंतिम वर्षों में यह प्रेमानुभूति और भी गहन होती गई।

आज पाँच शताब्दियों बाद भी, चैतन्य महाप्रभु की विरासत जीवंत है। हरिनाम संकीर्तन विश्व के अनेक देशों में गूँज रहा है। गौड़ीय वैष्णव परंपरा ने उनके संदेश को वैश्विक स्वर दिया। उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत यह बताते हैं कि आध्यात्मिकता केवल तपस्या या ज्ञान की जटिल साधना नहीं; वह निष्कपट प्रेम का सरल मार्ग भी है। जब हृदय निर्मल होकर भगवान का नाम लेता है, तो वही नाम साधक को परम आनंद से भर देता है।

महाप्रभु का जीवन यह भी सिखाता है कि सच्ची भक्ति विनम्रता में निहित है। वे स्वयं को सदैव भगवान का दास मानते थे। उनका आचरण, उनकी वाणी और उनका कीर्तन—सबमें नम्रता झलकती थी। यही कारण है कि उनके विरोधी भी अंततः उनके प्रेम से जीत लिए गए। उन्होंने यह दिखाया कि परिवर्तन का सबसे प्रभावी साधन करुणा है, न कि कठोरता।

समय के साथ अनेक संत और आचार्य उनके पथ पर चले, किंतु मूल स्रोत वही दिव्य व्यक्तित्व रहा, जिसने प्रेम को धर्म का सार और हरिनाम को जीवन का आधार बनाया। उनके द्वारा प्रवाहित संकीर्तन-धारा आज भी मानवता को जोड़ती है, विभाजन को मिटाती है और आत्मा को उसके मूल स्रोत की ओर लौटने का मार्ग दिखाती है।

इस प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु का जीवन केवल एक संत की जीवनी नहीं, बल्कि प्रेम-क्रांति की अमर गाथा है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि जब हृदय में निष्काम प्रेम जागता है, तब वही प्रेम समाज को बदल सकता है। उनका नाम, उनका कीर्तन और उनका दर्शन आज भी करोड़ों हृदयों में आशा, शांति और आनंद का संचार कर रहा है। प्रेम की यह ज्योति, जो फाल्गुन पूर्णिमा की उस रात मायापुर में प्रज्वलित हुई थी, आज भी अनवरत प्रकाशमान है और युगों-युगों तक मानवता को आलोकित करती रहेगी।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

फोन टैपिंग के आरोपों पर सियासी संग्राम तेज, सिद्धारमैया का पलटवार—'चोर को सब चोर ही दिखते हैं'

बेंगलुरु। कर्नाटक की राजनीति एक बार फिर आरोप–प्रत्यारोप के भंवर में उलझ गई है। फोन टैपिंग के गंभीर आरोपों ने सत्ता और विपक्ष के बीच टकराव को और तीखा बना दिया है। केंद्रीय मंत्री एच.डी. कुमारस्वामी और विधानसभा में विपक्ष के नेता आर. अशोक ने दावा किया कि राज्य सरकार उपमुख्यमंत्री की जासूसी करा रही है। इन आरोपों के बाद राजनीतिक हलकों में हलचल तेज हो गई। हालांकि मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने इन दावों को सिरे से खारिज करते हुए विपक्ष पर तीखा हमला बोला और कहा कि यह सब हताशा की राजनीति का हिस्सा है। उन्होंने व्यंग्यात्मक अंदाज में कहा, "चोर को सब चोर ही दिखते हैं।" मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि उनकी सरकार किसी भी तरह की अवैध निगरानी में शामिल नहीं है। उन्होंने कहा कि जब से कांग्रेस ने राज्य की सत्ता संभाली है, विपक्ष लगातार यह कोशिश कर रहा है कि उनके और उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार के बीच दरार पैदा की जाए। सिद्धारमैया ने कहा कि चाहे कितनी भी कोशिश कर ली जाए, उनके आपसी संबंधों और पार्टी की एकजुटता पर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा। उन्होंने दोहराया कि वह और शिवकुमार दोनों पार्टी आलाकमान के प्रति पूरी तरह वफादार हैं और कांग्रेस एक आंतरिक लोकतंत्र वाली पार्टी है, जो किसी भय या दबाव में काम नहीं करती।

मुख्यमंत्री ने आरोप लगाने वाले नेताओं के राजनीतिक अतीत का जिक्र करते हुए कहा कि ये वही लोग हैं जो स्वयं मुख्यमंत्री और गृह मंत्री जैसे महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं।

उस समय राज्य का खुफिया विभाग उनके अधीन कार्य करता था। सिद्धारमैया ने तंज कसते हुए कहा कि शायद उनके मौजूदा आरोप उनके अपने कार्यकाल के अनुभवों से प्रेरित हैं। उन्होंने भाजपा और जेडीएस पर झूठा माहौल बनाने और जनता को भ्रमित करने का आरोप लगाया। मुख्यमंत्री ने यह भी याद दिलाया कि वर्ष 2018 में जब कुमारस्वामी मुख्यमंत्री थे, तब आदिचुंचनगिरी मठ के पुजारियों सहित कई धार्मिक नेताओं के फोन टैप किए जाने के आरोप सामने आए थे। बाद में हुई जांच में कई फोन की निगरानी की पुष्टि हुई थी, जिसने उस समय भी सियासी हलचल पैदा की थी।

इस बीच उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने भी खुलकर अपनी बात रखी। उन्होंने मुख्यमंत्री के साथ अपने संबंधों को मजबूत बताते हुए कहा कि उनका रिश्ता "दूध और शहद" जैसा है। शिवकुमार ने कहा कि दोनों नेताओं के बीच किसी प्रकार की गलतफहमी नहीं है और विपक्ष के आरोप निराधार हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने जो कहा है, वह अनुभव के आधार पर कहा है और समय स्वयं इन आरोपों का जवाब देगा। मुख्यमंत्री पद को लेकर चल रही चर्चाओं पर उन्होंने कहा कि उन्होंने इस विषय पर कोई बातचीत नहीं की है और फिलहाल सरकार के कामकाज पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

शिवकुमार ने यह भी जानकारी दी कि कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप में उनके छह वर्ष पूरे होने जा रहे हैं, जिसके उपलक्ष्य में 10 मार्च को एक डिनर का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने संकेत दिया कि पार्टी में नए नेतृत्व को भी आगे आने का अवसर मिलना चाहिए। इस बयान को राजनीतिक विश्लेषक भविष्य की संभावित रणनीतियों के संकेत के रूप में देख रहे हैं, हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकार के भीतर कोई मतभेद नहीं है।

फोन टैपिंग के आरोपों ने राज्य की राजनीति को गर्मा दिया है। विपक्ष का कहना है कि यदि सरकार के भीतर ही शीर्ष नेताओं की निगरानी की जा रही है, तो यह लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है। वहीं सत्तापक्ष का दावा है कि यह पूरी कहानी राजनीतिक साजिश का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य सरकार की छवि को धूमिल करना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस सरकार पारदर्शिता और कानून के दायरे में काम कर रही है और किसी भी प्रकार की अवैध गतिविधि का समर्थन नहीं करती।

सिद्धारमैया ने केंद्र सरकार पर भी निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पुलिस, सीबीआई, प्रवर्तन निदेशालय और आयकर विभाग जैसी संस्थाओं का इस्तेमाल राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को दबाने के लिए किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि वह और उनकी पार्टी किसी भी तरह की धमकी या दबाव के आगे नहीं झुकेंगे। उन्होंने विपक्षी नेताओं को सलाह दी कि वे रचनात्मक विपक्ष की भूमिका निभाएं और राज्य के विकास में सहयोग करें।

राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि यह विवाद आने वाले दिनों में और गहराई पकड़ सकता है। कर्नाटक की राजनीति में पहले भी फोन टैपिंग जैसे मुद्दे गंभीर बहस का कारण बन चुके हैं। इस बार भी आरोपों की प्रकृति ऐसी है, जो सीधे तौर पर सत्ता के शीर्ष स्तर को प्रभावित करती है। हालांकि फिलहाल सरकार ने स्पष्ट शब्दों में इन आरोपों से इनकार किया है और इसे विपक्ष की रणनीति बताया है।

जनता के बीच भी इस मुद्दे को लेकर चर्चा है। एक ओर जहां विपक्ष इसे लोकतंत्र के लिए खतरा बता रहा है, वहीं सत्तारूढ़ दल इसे राजनीतिक नाटक कह रहा है। मुख्यमंत्री ने भरोसा जताया कि कांग्रेस सरकार अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा करेगी और राज्य के विकास के एजेंडे पर आगे बढ़ती रहेगी। उन्होंने कहा कि कर्नाटक की जनता ने कांग्रेस को स्पष्ट जनादेश दिया है और सरकार उस विश्वास को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

'अभिव्यक्ति 2026' में प्रतिभा, संस्कृति और आत्मविश्वास की उजली छटा

सूरत। शहर की शैक्षणिक और सांस्कृतिक दुनिया के लिए रविवार का दिन बेहद खास बन गया, जब सनराइज विद्यालय का वार्षिक महोत्सव 'अभिव्यक्ति 2026' गरिमामय और उत्साहपूर्ण वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन सूरत के प्रतिष्ठित सभागार सरदार स्मृति भवन में किया गया, जहां विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, अनुशासन और सांस्कृतिक चेतना का अद्भुत संगम देखने को मिला। पूरा सभागार रंग-बिरंगी रोशनी, सजीव मंच सज्जा और अभिभावकों की उत्सुक उपस्थिति से सजीव हो उठा। कार्यक्रम ने यह साबित कर दिया कि शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास का माध्यम है। इस भव्य समारोह में अनुपम सिंह गहलोत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके आगमन से कार्यक्रम की गरिमा और बढ़ गई। जैसे ही वे सभागार में पहुंचे, विद्यार्थियों और शिक्षकों ने तालियों की गूंज के साथ उनका स्वागत किया। कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय परंपरा के अनुरूप दीप प्रज्वलन से हुई।

दीप प्रज्ज्वलन के साथ ही ज्ञान, ऊर्जा और सकारात्मकता का संदेश पूरे वातावरण में फैल गया। यह क्षण विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक और गर्व से भर देने वाला था।

विद्यालय के मैनेजिंग डायरेक्टर संजयभाई बलदानिया और ब्रांच हेड आशीषभाई बलदानिया ने मुख्य अतिथि को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका हार्दिक स्वागत किया। स्वागत भाषण में विद्यालय प्रशासन ने वर्ष भर की शैक्षणिक, सांस्कृतिक और खेल उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों की मेहनत और शिक्षकों के समर्पण की सराहना की। उन्होंने कहा कि 'अभिव्यक्ति' केवल एक वार्षिक समारोह नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की प्रतिभा को मंच देने का सशक्त माध्यम है, जहां वे अपने अंदर छिपी कला और आत्मविश्वास को खुलकर प्रदर्शित कर सकते हैं। कार्यक्रम का सांस्कृतिक भाग अत्यंत आकर्षक और मनमोहक रहा। नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों से लेकर वरिष्ठ कक्षाओं के छात्रों तक सभी ने मंच पर अपनी प्रस्तुति से दर्शकों का दिल जीत लिया। रंगारंग नृत्य प्रस्तुतियों में भारतीय लोक संस्कृति की झलक दिखाई दी। राजस्थानी, गुजराती और पंजाबी लोकनृत्यों ने पूरे माहौल को उत्सवमय बना दिया। देशभक्ति से ओतप्रोत समूह नृत्य ने सभागार में बैठे सभी लोगों को भावविभोर कर दिया। बच्चों की मासूम अभिव्यक्तियों और सधे हुए कदमों ने यह स्पष्ट कर दिया कि उन्होंने इस दिन के लिए कड़ी मेहनत की है।

नाटक प्रस्तुतियों ने भी सामाजिक संदेशों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। एक नाटक में पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया, तो दूसरे में डिजिटल युग में पारिवारिक मूल्यों की अहमियत को रेखांकित किया गया। विद्यार्थियों की संवाद अदायगी, मंच संचालन और भाव-भंगिमाओं ने दर्शकों को आश्चर्यचकित कर दिया। कार्यक्रम के दौरान कई बार तालियों की गूंज से सभागार गूंज उठा। अभिभावकों के चेहरों पर गर्व और खुशी साफ झलक रही थी।

संगीत प्रस्तुतियों में भी विद्यार्थियों ने अपनी सुरमयी आवाज से सभी का मन मोह लिया। शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति ने जहां परंपरा की झलक दिखाई, वहीं आधुनिक गीतों पर आधारित समूह गान ने युवाओं की ऊर्जा और उमंग को प्रदर्शित किया। मंच सज्जा, प्रकाश व्यवस्था और ध्वनि संयोजन ने कार्यक्रम को और भी भव्य बना दिया। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो पूरा मंच जीवंत चित्र बन गया हो, जिसमें हर रंग, हर सुर और हर कदम एक नई कहानी कह रहा हो।

सूरत में '0001' का जलवा: 6 करोड़ की लेम्बोर्गिनी के लिए 13.81 लाख में खरीदी वीआईपी नंबर प्लेट

सूरत। हीरे, टेक्सटाइल और तेज़ रफ्तार कारोबारी संस्कृति के लिए मशहूर सूरत में लग्ज़री और स्टेटस सिंबल का एक और अनोखा अध्याय जुड़ गया है। शहर में फैंसी नंबर प्लेट को लेकर दीवानगी किस हद तक पहुंच चुकी है, इसका ताजा उदाहरण तब सामने आया जब 6 करोड़ रुपये की लेम्बोर्गिनी कार के लिए '0001' नंबर प्लेट हासिल करने को 13,81,000 रुपये की रिकॉर्ड बोली लगा दी गई। यह बोली सूरत क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय की नई 'JX' सीरीज़ की नीलामी में लगी, जिसने न केवल शहर बल्कि ऑटोमोबाइल जगत में भी चर्चा छेड़ दी है।

यह पूरी प्रक्रिया सूरत आरटीओ द्वारा आयोजित की गई ऑनलाइन नीलामी के माध्यम से हुई, जहां चारपहिया वाहनों के लिए जारी 'JX' सीरीज़ के विशेष और आकर्षक नंबरों को बोली के लिए रखा गया था। इनमें '0001' नंबर सबसे अधिक मांग और प्रतिस्पर्धा का केंद्र बना। शहर के कई उद्योगपति, कारोबारी और लग्ज़री कार प्रेमी इस नंबर को पाने की दौड़ में शामिल थे, लेकिन अंततः यशवी ग्रुप के फाउंडर और मैनेजिंग डायरेक्टर परेश खंडेलवाल ने सबसे ऊंची बोली लगाकर बाज़ी अपने नाम कर ली।

बताया जा रहा है कि परेश खंडेलवाल ने अपनी नई लेम्बोर्गिनी, जिसकी कीमत लगभग 6 करोड़ रुपये है, के लिए '0001' नंबर पाने को 13.81 लाख रुपये खर्च किए। यह रकम इतनी है कि इसमें एक प्रीमियम सेडान या शानदार एसयूवी खरीदी जा सकती है, लेकिन यहां यह राशि केवल एक नंबर प्लेट के लिए अदा की गई। आरटीओ अधिकारियों के अनुसार, सूरत में किसी एक नंबर के लिए अब तक इतनी बड़ी रकम की पेशकश नहीं हुई थी। इस तरह यह बोली शहर के इतिहास में एक नया रिकॉर्ड बन गई है। सूरत में फैंसी नंबरों का क्रेज कोई नया नहीं है। यहां कारोबारी समुदाय में विशिष्ट और यादगार नंबर को प्रतिष्ठा, पहचान और शुभ संकेत के रूप में देखा जाता है। '0001' को विशेष रूप से वीआईपी और सर्वोच्चता का प्रतीक माना जाता है। यही कारण है कि इस नंबर के लिए हर नई सीरीज़ में जबरदस्त प्रतिस्पर्धा देखने को मिलती है। 'JX' सीरीज़ की नीलामी में भी यही नज़ारा देखने को मिला, जहां शुरुआती बोली के बाद धीरे-धीरे रकम बढ़ती गई और अंततः 13.81 लाख पर जाकर थमी। परेश खंडेलवाल को लग्ज़री कारों और फैंसी नंबरों का विशेष शौक है। उनके कार कलेक्शन में बीएमडब्ल्यू, मर्सिडीज, रेंज रोवर और लेम्बोर्गिनी जैसी महंगी गाड़ियां शामिल हैं। दिलचस्प बात यह है कि उनके अधिकांश वाहनों के नंबर '0001' हैं। इससे पहले उन्होंने अपनी रेंज रोवर के लिए 'RZ' सीरीज़ में '0001' नंबर हासिल करने को 11.95 लाख रुपये खर्च किए थे। इस बार 13.81 लाख रुपये की बोली लगाकर उन्होंने अपना ही पिछला रिकॉर्ड तोड़ दिया। जानकारों का कहना है कि उनके लिए यह केवल एक नंबर नहीं, बल्कि ब्रांड वैल्यू और व्यक्तिगत पहचान का हिस्सा है।

नीलामी में केवल '0001' ही नहीं, बल्कि अन्य कई फैंसी नंबरों के लिए भी ऊंची बोलियां लगीं। '9999' नंबर 3.62 लाख रुपये में बिका, जबकि '0007' नंबर 3.01 लाख रुपये में गया। इसी तरह GJ-05-JX-1234 के लिए 2.83 लाख रुपये की बोली लगी। GJ-05-JX-9119 के लिए 81,000 रुपये, GJ-05-JX-0005 के लिए 70,000 रुपये, GJ-05-JX-7000 के लिए 65,000 रुपये, GJ-05-JX-1000 के लिए 61,000 रुपये, GJ-05-JX-0006 के लिए 55,000 रुपये और GJ-05-JX-0012 के लिए 42,000 रुपये अदा किए गए। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि सूरत में फैंसी नंबरों के प्रति आकर्षण लगातार बढ़ रहा है और लोग अपनी पसंद के नंबर के लिए बड़ी से बड़ी रकम चुकाने को तैयार हैं।

सोना वायदा 4149 रुपये और चांदी वायदा 10805 रुपये लुढ़का: क्रूड ऑयल वायदा में 584 रुपये का ऊछाल

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 50370.32 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 8949.42 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 41420.9 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 1804.88 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 6795.15 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा 161995 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 162999 रुपये और नीचे में 159649 रुपये पर पहुंचकर, 166074 रुपये के पिछले बंद के सामने 4149 रुपये या 2.5 फीसदी गिरकर 161925 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी मार्च वायदा 3512 रुपये या 2.59 फीसदी गिरकर 132261 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल मार्च वायदा 424 रुपये या 2.48 फीसदी गिरकर 16651 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 159500 रुपये के भाव पर खूलकर, 159609 रुपये के दिन के उच्च और 156048 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 4304 रुपये या 2.63 फीसदी गिरकर 159255 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन मार्च वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 165206 रुपये के भाव पर खूलकर, 166500 रुपये के दिन के उच्च और 157067 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 167092 रुपये के पिछले बंद के सामने 4260 रुपये या 2.55 फीसदी गिरकर 162832 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 259320 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 259320 रुपये और नीचे में 259320 रुपये पर पहुंचकर, 270125 रुपये के पिछले बंद के सामने 10805 रुपये या 4 फीसदी घटकर 259320 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 18684 रुपये या 6.55 फीसदी लुढ़ककर 266442 रुपये प्रति किलो बोला गया। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 18855 रुपये या 6.61 फीसदी घटकर 266382 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कमोडिटी वायदाओं में 8949.42 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 41420.9 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर: सोना-चांदी के वायदाओं में 6795.15 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार

मेटल वर्ग में 779.48 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा मार्च वायदा 21.05 रुपये या 1.73 फीसदी गिरकर 1193.75 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। जबकि जस्ता मार्च वायदा 1.6 रुपये या 0.49 फीसदी गिरकर 325.75 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इसके सामने एल्यूमीनियम मार्च वायदा 6.45 रुपये या 2.02 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 325.55 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा मार्च वायदा 65 पैसे या 0.34 फीसदी घटकर 189.05 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1002.45 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल मार्च वायदा 6650 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 7081 रुपये और नीचे में 6650 रुपये पर पहुंचकर, 584 रुपये या 8.99 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 7081 रुपये प्रति बैरल पर आ गया। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी मार्च वायदा 584 रुपये या 8.99 फीसदी की बढ़त के साथ 7081 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। इनके अलावा नैचुरल गैस मार्च वायदा 278 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 288 रुपये और नीचे में 277.9 रुपये पर पहुंचकर, 271.7 रुपये के पिछले बंद के सामने 15.3 रुपये या 5.63 फीसदी बढ़कर 287 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी मार्च वायदा 14.9 रुपये या 5.48 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 286.9 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 6037.91 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 757.23 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 571.44 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 138.50 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 2.33 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 67.21 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 181.42 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 817.95 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 9698 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 77657 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 27185 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 397234 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 53035 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7283 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 17544 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 65500 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 22276 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 27825 लोट के स्तर पर था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल मार्च 7000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 306 रुपये की बढ़त के साथ 552.4 रुपये हुआ।

सोना मार्च 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 13 रुपये की गिरावट के साथ 519 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मार्च 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 4212.5 रुपये की गिरावट के साथ 11047 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 7.3 रुपये की गिरावट के साथ 36 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल मार्च 7000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 279.5 रुपये की गिरावट के साथ 469 रुपये हुआ।

सोना मार्च 150000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 838.5 रुपये की बढ़त के साथ 1700 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मार्च 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 1569 रुपये की बढ़त के साथ 2900 रुपये हुआ। तांबा मार्च 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 11.3 रुपये की बढ़त के साथ 39.12 रुपये हुआ।

पश्चिम रेलवे द्वारा होली त्योहार की भीड़ को संभालने के लिए व्यापक व्यवस्थाएँ

पश्चिम रेलवे द्वारा उन्नत भीड़ प्रबंधन उपायों के साथ सुगम एवं सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित

पश्चिम रेलवे द्वारा होली त्योहार के दौरान यात्रियों की भारी भीड़ के प्रभावी प्रबंधन हेतु व्यापक व्यवस्थाएँ की गई हैं। पश्चिम रेलवे द्वारा इस त्योहार पर अपने गृह नगरों की ओर यात्रा कर रहे रेल यात्रियों के लिए सभी विभागों के बीच समन्वित और कुशल तालमेल के माध्यम से सुगम, सुरक्षित एवं निर्बाध यात्रा सुनिश्चित की गई है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, होली त्योहार के अवसर पर यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा फरवरी के अंतिम सप्ताह से मार्च माह तक अपने स्टेशनों से स्पेशल ट्रेनों के 308 फेरे चलाने की घोषणा की गई है। तदनुसार, 21 फरवरी से 02 मार्च, 2026 तक पश्चिम रेलवे द्वारा द्वारा गोरखपुर, बनारस, दानापुर, समस्तीपुर, दरभंगा, भगत की कोठी (जोधपुर), हरिद्वार, रक्सौल, हजरत निजामुद्दीन, दिल्ली सहित अन्य महत्वपूर्ण स्टेशनों के लिए 266 स्पेशल ट्रेनें परिचालित की गईं। इन ट्रेनों के माध्यम से उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान तथा गुजरात जैसे प्रमुख राज्यों को कवर करते हुए यात्रियों की मांग को पूरा किया गया। 27 फरवरी से 02 मार्च, 2026 की अवधि के दौरान जोन द्वारा 27 लाख से अधिक यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुँचाया गया।

भीड़ प्रबंधन हेतु उठाये गये प्रभावी कदम त्योहार के दौरान बढ़ी हुई यात्री भीड़ के सुव्यवस्थित प्रबंधन के लिए निम्नलिखित उपाय किए गए:

- स्पेशल ट्रेनों के संबंध में यात्रियों में किसी प्रकार की भ्रम की स्थिति से बचने हेतु नियमित घोषणाएँ की गईं।
- स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से ट्रेनों की जानकारी प्रदर्शित की गई।
- रेल कर्मचारियों द्वारा स्टेशनों पर यात्रियों को समुचित मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान की गई।
- यात्रियों को एटीवीएम तथा रेलवन ऐप के माध्यम से टिकट खरीदने के लिए प्रेरित करने हेतु प्रचार-प्रसार अभियान चलाए गए।
- कतार में प्रतीक्षा कर रहे यात्रियों को टिकट जारी करने हेतु स्टेशनों पर मोबाइल यूटीएस टिकटिंग सुविधा उपलब्ध कराई गई।
- त्वरित टिकट निर्गमन सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त बुकिंग काउंटर, एटीवीएम तथा हैंड-हेल्ड टिकटिंग टर्मिनल की व्यवस्था की गई।
- महत्वपूर्ण स्टेशनों पर यात्री आवागमन को विनियमित करने एवं भीड़ नियंत्रण के लिए होल्डिंग एरिया बनाए गए।
- होल्डिंग एरिया में यात्रियों की सुविधा हेतु पेयजल, बैठने की व्यवस्था एवं अन्य मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं।
- स्पेशल ट्रेनों की जानकारी का व्यापक प्रचार-प्रसार प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया के माध्यम से किया गया।
- ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों द्वारा उभरती परिचालन आवश्यकताओं के अनुरूप त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित की गई।
- प्रमुख स्टेशनों एवं ट्रेनों में पर्याप्त रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) तथा टिकट जांच स्टाफ की तैनाती की गई।
- संवेदनशील स्टेशनों पर यात्री आवागमन की रीयल-टाइम निगरानी हेतु ड्रोन कैमरा एवं सीसीटीवी सर्विलांस का उपयोग किया गया।
- स्पेशल ट्रेनों के समयबद्ध परिचालन को सुनिश्चित करने हेतु सतत निगरानी की गई।
- यात्रियों के सुरक्षित चढ़ने एवं उतरने की व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए प्रभावी भीड़ प्रबंधन किया गया, जिसके तहत फुट ओवर ब्रिज, प्लेटफॉर्म, प्रवेश/निकास द्वार तथा ट्रेनों के भीतर आरपीएफ कर्मियों की तैनाती की गई।

पश्चिम रेलवे अपने संपूर्ण नेटवर्क पर यात्री आवागमन की निरंतर एवं गहन निगरानी कर रही है तथा होली त्योहार के दौरान यात्रियों को सुरक्षित, आरामदायक एवं सुविधाजनक यात्रा सुनिश्चित करने हेतु आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्त स्पेशल ट्रेन सेवाएँ चलाने और आवश्यक संसाधनों की तैनाती के लिए पूर्णतः तत्पर है।

ईरान पर हमले के विरोध में जंतर-मंतर पर वाम दलों का हुंकार, केंद्र की 'चुप्पी' पर उठाए सवाल

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और ईरान पर अमेरिका–इस्राइल की संयुक्त सैन्य कार्रवाई के विरोध में राजधानी दिल्ली का जंतर-मंतर एक बार फिर राजनीतिक प्रतिरोध का केंद्र बन गया। वाम दलों ने यहां एकजुट होकर जोरदार प्रदर्शन किया और केंद्र सरकार पर अंतरराष्ट्रीय संकट के इस मुद्दे पर चुप्पी साधने का आरोप लगाया। प्रदर्शनकारियों ने ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की हत्या की कड़ी निंदा करते हुए इसे क्षेत्रीय स्थिरता के लिए गंभीर खतरा बताया। मंच से वक्ताओं ने कहा कि भारत जैसे बड़े लोकतंत्र को शांति, संप्रभुता और अंतरराष्ट्रीय कानून के पक्ष में स्पष्ट आवाज उठानी चाहिए।

जंतर-मंतर पर जुटे कार्यकर्ताओं और समर्थकों के हाथों में तख्तियां थीं, जिन पर युद्ध विरोधी नारे लिखे थे। "युद्ध नहीं, संवाद चाहिए", "संप्रभु राष्ट्रों पर हमला बंद करो" और "भारत शांति की पहल करे" जैसे नारे पूरे परिसर में गूंजते रहे। प्रदर्शन में शामिल नेताओं ने कहा कि जब ईरान और पश्चिमी देशों के बीच बातचीत की प्रक्रिया जारी थी, उसी दौरान सैन्य हमला करना कूटनीतिक प्रयासों को कमजोर करने वाला कदम है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि वैश्विक राजनीति में ताकतवर देश अपनी रणनीतिक प्राथमिकताओं के तहत छोटे और विकासशील देशों की संप्रभुता को नजरअंदाज कर रहे हैं।

प्रदर्शन के दौरान ब्रिंदा करात ने केंद्र सरकार पर सीधा हमला बोला। उन्होंने कहा कि पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका ने ईरान पर हमला किया और भारत सरकार इस पर स्पष्ट रुख अपनाने से बच रही है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नाम लेते हुए कहा कि भारत की विदेश नीति को ऐतिहासिक रूप से गुटनिरपेक्षता और संप्रभुता के सिद्धांतों पर आधारित माना जाता रहा है, लेकिन मौजूदा समय में सरकार की चुप्पी चिंता का विषय है। ब्रिंदा करात ने इस्राइल की सैन्य कार्रवाई को आक्रामक बताते हुए कहा कि भारत को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर शांति और संवाद की वकालत करनी चाहिए।

वहीं डिपांकर भट्टाचार्य ने अपने संबोधन में चेतावनी दी कि यह संघर्ष व्यापक क्षेत्रीय युद्ध का रूप ले सकता है। उन्होंने कहा कि पश्चिम एशिया में लाखों भारतीय नागरिक काम करते हैं और यदि वहां हालात बिगड़ते हैं तो इसका सीधा असर भारत की अर्थव्यवस्था और नागरिकों की सुरक्षा पर पड़ेगा। उन्होंने सरकार से अपील की कि वह कूटनीतिक स्तर पर सक्रिय पहल करे और युद्धविराम की दिशा में प्रयास तेज करे। उन्होंने यह भी कहा कि भारत को संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर स्पष्ट रूप से शांति का पक्ष लेना चाहिए।

वाम नेताओं ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार की विदेश नीति अमेरिका के दबाव में झुकी हुई प्रतीत होती है। उनका कहना था कि भारत को किसी भी सैन्य गठजोड़ से दूरी बनाए रखनी चाहिए और अपनी स्वतंत्र विदेश नीति की परंपरा को कायम रखना चाहिए। वक्ताओं ने कहा कि भारत ने अतीत में कई अंतरराष्ट्रीय संकटों में संतुलित और रचनात्मक भूमिका निभाई है, ऐसे में मौजूदा संकट में भी उसे पहल करनी चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं होता और इसका सबसे ज्यादा खामियाजा आम नागरिकों को भुगतना पड़ता है।

प्रदर्शन में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, सीपीआई(एमएल) लिबरेशन, रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी और ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक समेत कई वाम दलों के प्रतिनिधि शामिल हुए। आयोजकों ने कहा कि यह विरोध किसी एक देश के पक्ष या विपक्ष में नहीं, बल्कि सैन्य आक्रामकता और युद्ध की राजनीति के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि भारत को वैश्विक शांति प्रयासों में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए और संवाद की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में सहयोग देना चाहिए।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पश्चिम एशिया में बढ़ता तनाव वैश्विक अर्थव्यवस्था और ऊर्जा बाजारों पर भी असर डाल सकता है। भारत, जो अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से पूरा करता है, स्वाभाविक रूप से इस संकट से प्रभावित हो सकता है। ऐसे में विपक्षी दलों का यह प्रदर्शन केवल वैचारिक असहमति नहीं, बल्कि संभावित रणनीतिक और आर्थिक चिंताओं का भी प्रतिबिंब है। हालांकि केंद्र सरकार की ओर से अब तक इस मामले पर विस्तृत आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है, लेकिन विदेश मंत्रालय के सूत्रों का कहना है कि भारत क्षेत्र में शांति और स्थिरता का समर्थक है।

पांचवीं पास दीपक पटेल डेयरी क्षेत्र में 'मिरेकल बॉय' के रूप में उभरे : कृत्रिम गर्भाधान में 80 फीसदी गर्भधारण की सफलता दर के साथ देश में अव्वल

- दीपक पटेल की 80 फीसदी गर्भधारण की सफलता दर के चलते पशुपालकों को अधिक दुधारू पशु मिले और पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता भी बढ़ी
- देश में एक संकर गाय प्रतिदिन औसतन 7.4 लीटर दूध देती है
- गुजरात में एक संकर गाय प्रतिदिन औसतन 8.05 लीटर दूध देती है
- सूरत जिले की महुवा तहसील में एक संकर गाय प्रतिदिन 11.3 लीटर दूध देती है
- दीपक पटेल की कुशलता और समर्पण से हजारों पशुपालकों की आय बढ़ी

गांधीनगर : गुजरात के सूरत जिले की महुवा तहसील के वहेवल नामक एक छोटे से गांव में रहने वाले 5वीं पास 63 वर्षीय दीपक पटेल कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन के तौर पर अपनी असाधारण कुशलता के कारण देशभर में डेयरी उद्योग क्षेत्र में 'मिरेकल बॉय' के रूप में उभरकर सामने आए हैं।

दीपक पटेल ने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान (आर्टिफिशियल इनसेमिनेशन-एआई) के जरिए 80 फीसदी गर्भधारण की सफलता दर हासिल कर एक नया कीर्तिमान बनाते हुए भारत में इस क्षेत्र में प्रथम स्थान अर्जित किया है।

उनकी इस विशिष्ट उपलब्धि के चलते भारत के डेयरी उद्योग क्षेत्र से जुड़े लोग उन्हें 'मिरेकल बॉय' कहते हैं।

दीपक पटेल 1999 से सूरत जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड (सुमुल डेयरी) से जुड़े हुए हैं और कृत्रिम गर्भाधान के काम में लगे हुए हैं। उन्होंने पिछले दो दशकों से कृत्रिम गर्भाधान में 80 फीसदी गर्भधारण की सफलता दर को बनाए रखा है, जिसे एक असाधारण उपलब्धि कहा जा सकता है।

दीपक पटेल देश भर में अव्वल

विशेषज्ञों के अनुसार, भारत में कृत्रिम गर्भाधान की औसत सफलता दर 35 से 40 फीसदी है। वहीं, दीपकभाई की सफलता दर लगभग 80 फीसदी है। कृत्रिम गर्भाधान क्षेत्र में 80 फीसदी सफलता की यह दर राष्ट्रीय औसत के मुकाबले दोगुनी है।

दीपक पटेल की इस असाधारण कुशलता के कारण सूरत जिले के कई इलाकों में, विशेषकर महुवा तहसील में पशुओं की प्रजनन क्षमता, दुग्ध उत्पादन और किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

अब तक 80 हजार से अधिक कृत्रिम गर्भाधान की प्रक्रिया संपन्न की

सुमुल डेयरी के वेटरनरी विभाग के प्रमुख डॉ. अजीतसिंह जादव ने बताया कि सुमुल डेयरी द्वारा अपने कार्यक्षेत्र के अंतर्गत सूरत और तापी जिले में प्रतिवर्ष लगभग पांच लाख कृत्रिम गर्भाधान किए जाते हैं। सुमुल डेयरी की कृत्रिम गर्भाधान की सफलता दर लगभग 53 फीसदी है।

दीपकभाई की विशेष दक्षता के कारण उनकी सफलता की दर लगभग 80 फीसदी है और उनकी इस सफलता का लाभ उनके क्षेत्र (महुवा) में पशुपालकों को मिलता है। यही कारण है कि इस क्षेत्र में न केवल दुधारू पशुओं की संख्या बढ़ रही है, बल्कि पशुओं की दुग्ध उत्पादकता भी अधिक है।

दीपक पटेल की सफलता का राज

दीपक पटेल की सफलता के राज को एक केस स्टडी के जरिए समझा जा सकता है। कुछ दिनों पहले एक पशुपालक ने उन्हें फोन किया और बताया कि उनकी गाय को कृत्रिम गर्भाधान की जरूरत है। दीपक पटेल पशुपालक के घर पहुंचे। गाय का निरीक्षण किया और पशुपालक को कुछ घंटे इंतजार करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि वह शाम को वापस आएंगे फिर कृत्रिम गर्भाधान की प्रक्रिया संपन्न करेंगे। वजह यह थी कि गाय अभी पूरी तरह से ताव (हीट) में नहीं आई थी, इसलिए यह समय कृत्रिम गर्भाधान के लिए उपयुक्त नहीं था। कृत्रिम गर्भाधान के लिए सटीक समय की पहचान करना ही उनकी असाधारण सफलता का मुख्य राज है।

सुमुल डेयरी के पूर्व प्रबंध निदेशक डॉ. पी.आर. पांडे ने कहा, "सुमुल डेयरी ने दीपकभाई की प्रतिभा को बहुत पहले ही पहचान लिया था। वे देश में सर्वाधिक 80 फीसदी की सफलता दर के साथ कृत्रिम गर्भाधान करने वाले तकनीशियन हैं। यह एक असाधारण सफलता है और उनकी इस कुशलता के कारण हजारों पशुपालकों की आय बढ़ी है और पशु नस्ल सुधार का काम तेज हुआ है।"

सुमुल डेयरी सूरत और तापी जिले से दूध एकत्रित करती है और यह गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ (जीसीएमएमएफ) से जुड़ी सहकारी संस्था है, जो अमूल ब्रांड के तहत डेयरी उत्पादों का विपणन और निर्यात करता है।

पशुपालकों की आर्थिक उन्नति के प्रणेता

दीपकभाई द्वारा किए जाने वाले सफल कृत्रिम गर्भाधान से किसानों को सीधा आर्थिक फायदा होता है। कृत्रिम गर्भाधान में 80 फीसदी सफलता दर का अर्थ यह है कि उनके द्वारा किए गए हर 100 पशुओं के कृत्रिम गर्भाधान में से 80 पशु गर्भधारण करते हैं। इस सफलता के कारण दुग्ध उत्पादन बढ़ता है, पशुपालकों की लागत कम होती है और उनकी आय में वृद्धि होती है।

कार्यक्षेत्र में बढ़ी पशुओं की दुग्ध उत्पादकता

डॉ. पी.आर. पांडे द्वारा दीपक पटेल पर लिखित पुस्तक के अनुसार कृत्रिम गर्भाधान में दीपक पटेल की सफलता उनके कार्यक्षेत्र (महुवा तहसील) में पशुओं की दुग्ध उत्पादकता के आंकड़ों में भी परिलक्षित होती है। देश में एक संकर गाय (क्रॉस बीड) औसतन प्रतिदिन 7.4 लीटर दूध देती है। गुजरात में एक संकर गाय औसतन प्रतिदिन 8.05 लीटर दूध देती है, लेकिन सूरत जिले की महुवा तहसील में एक संकर गाय प्रतिदिन 11.3 लीटर दूध देती है। कृत्रिम गर्भाधान के जरिए उच्च नस्ल वाला पशुधन ज्यादा दूध देता है और इससे पशुपालकों की आय भी बढ़ती है। यह दीपक पटेल की कुशलता और समर्पण ही है, जिसके कारण सूरत जिले की महुवा तहसील के हजारों पशुपालकों की गायें अधिक दूध देती हैं, जिससे उन पशुपालकों की आय में इजाफा हुआ है। दीपक पटेल की उम्र अभी 63 साल है। अपने ज्ञान और कौशल का लाभ आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए उन्होंने अपने दामाद को इस क्षेत्र में काम करने के लिए प्रशिक्षित किया है। उनके दामाद भी अब कृत्रिम गर्भाधान का काम करते हैं और उनके बताए मार्ग पर चल रहे हैं।

उनके जीवन की कहानी किताब और डॉक्यूमेंट्री फिल्म में संजोई गई

डॉ. पी.आर. पांडे और शाश्वत अध्वर्यु ने दीपक पटेल के जीवन पर अंग्रेजी भाषा में 'द मिरेकल बॉय – दीपक पटेल' नामक किताब लिखी है। इसके अलावा, कृत्रिम गर्भाधान के काम से जुड़े तकनीशियनों को प्रेरणा देने के लिए राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) ने दीपक पटेल के कार्य को दर्शाने के लिए 'सफल बीजदान' नामक एक शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री फिल्म भी बनाई है।

केंद्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने भी पशुधन विकास के क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए उन्हें सम्मानित किया है, जो उनके कार्य के राष्ट्रीय महत्व को दर्शाता है।

भारत दूध उत्पादन के क्षेत्र में दुनिया के अग्रणी देशों में से एक है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात डेयरी क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर रहा है। पूरे विश्व में दूध उत्पादन के क्षेत्र में भारत शीर्ष स्थान पर है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में और गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात डेयरी उद्योग के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर रहा है, तथा पशु सुधार के लिए पशुपालन विभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने नागरिकों को रंग उमंग के होली-धुलंडी पर्व पर शुभकामनाएँ दीं

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गुजरात के सभी नागरिकों को रंग-उमंग के उत्सव होली-धुलंडी पर्व की शुभकामनाएँ दी हैं। उन्होंने शुभकामनाएँ व्यक्त की हैं कि यह उत्सव जन-जन के जीवन को खुशी, समृद्धि एवं उल्लास के रंगों से तर-ब-तर कर दे।

उन्होंने कहा कि होली का यह पर्व असत्य पर सत्य की विजय का पर्व है। यह त्योहार सबके जीवन में राग-द्वेष भूल कर एक-दूसरे से स्नेह से मिलने तथा सामाजिक समरसता का संदेश देता है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रंगोत्सव पर्व पर सभी नागरिकों को प्रेषित किए गए अपने संदेश में यह अनुरोध भी किया कि सभी साथ मिलकर इस रंगोत्सव को इस प्रकार मनाएँ कि पर्यावरण का भी जतन हो।

रोमानिया के मिलीसौटी शहर के महापौर गुजरात की यात्रा पर, राज्य के स्मार्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर का जायजा लिया

महापौर ने अहमदाबाद महानगर पालिका तथा शहरी विकास एवं शहरी गृह निर्माण विभाग का दौरा कर अधिकारियों के साथ संवाद किया

गांधीनगर : यूरोपीय देश रोमानिया के मिलीसौटी टाउन के महापौर वासिले कारारे तथा उनकी पत्नी दो दिन की गुजरात यात्रा पर पधारे हैं। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने अहमदाबाद महानगर पालिका तथा राज्य के शहरी विकास एवं शहरी गृह निर्माण विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ ई-गवर्नेंस, शहरी विकास परियोजनाओं, नागरिक केन्द्रिय सेवाओं तथा औद्योगिक विकास के विषय में विचार-विमर्श किया।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (आईसीसीआर) द्वारा आयोजित इस यात्रा में श्री कारारे देश के विभिन्न राज्यों की यात्रा कर रहे हैं। गुजरात में उन्होंने अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन तथा मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि सहित वरिष्ठ अधिकारियों के साथ भेंट कर विकास परियोजनाओं, ई-गवर्नेंस, रिवरफ्रंट डेवलपमेंट, अर्बन ट्रांसपोर्ट, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट तथा शहरी विकास से जुड़े महत्वपूर्ण मामलों की जानकारी प्राप्त की। इस बीच उन्होंने अहमदाबाद में इंटीग्रेटेड तथा कंट्रोल सेंटर का भी दौरा किया।

मिलीसौटी के महापौर ने अहमदाबाद के अलावा गांधीनगर में शहरी विकास एवं शहरी गृह निर्माण विभाग के प्रधान सचिव श्री एम. थेन्नारसन, नगर पालिका प्रशासन आयुक्त सुश्री रेम्या मोहन तथा गुजरात शहरी विकास निगम के अपर मुख्य कार्यवाहक अधिकारी से भेंट की। इस दौरान उन्हें राज्य में शहरी विकास क्षेत्र में चल रही विभिन्न आइकॉनिक परियोजनाओं, ई-गवर्नेंस तथा राज्य सरकार के विजन के बारे में मार्गदर्शित किया गया। श्री कारारे ने मिलीसौटी शहर के लिए रिवरफ्रंट प्रोजेक्ट के विकास में योगदान देने के विषय में राज्य के अधिकारियों के साथ चर्चा की।

चर्चा के दौरान उन्हें बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट, धोलेरा हाईवे, सरदार वल्लभभाई पटेल स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, ड्रीम सिटी सूरत तथा शहर में विभिन्न शहरी विकास परियोजनाओं से सृजित रोजगार के अवसरों के बारे में बताया गया। उन्होंने इस चर्चा में मिलीसौटी में स्मार्ट सिटी के निर्माण के बारे में जानकारी भी प्रस्तुत की और राज्य में गिफ्ट सिटी, साबरमती रिवरफ्रंट तथा धोलेरा के विकास सहित शहरी विकास के लिए हुए कार्यों की प्रशंसा की। गुजरात की अपनी इस यात्रा के दौरान उन्होंने गिफ्ट सिटी का भी दौरा किया।

भारत तथा रोमानिया के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान अधिक सुदृढ़ बनाने एवं दोनों देशों में विद्यमान निवेश के अवसरों को प्रोत्साहन देने के लिए उनकी यह यात्रा महत्वपूर्ण है। उन्होंने रिवरफ्रंट विकास, स्मार्ट सिटी के विकास में एआई तथा डिजिटल प्रणालियों, अर्बन ट्रांसपोर्ट एवं ई-गवर्नेंस क्षेत्र में मौजूद अवसरों की चर्चा कर राज्य के अर्बन इकोसिस्टम, इन्फ्रास्ट्रक्चर व शहरी विकास की परियोजनाओं के विषय में सकारात्मक प्रतिभाव दिया।

अहमदाबाद मंडल का शानदार प्रदर्शन: रिकॉर्ड ₹690 करोड़ का राजस्व,पिछले वर्ष की तुलना में राजस्व में 11.10% की उल्लेखनीय वृद्धि

पश्चिम रेलवे का अहमदाबाद मंडल यात्रियों को सुरक्षित, सुगम एवं बेहतर सेवाएँ प्रदान करने तथा राजस्व वृद्धि के प्रति निरंतर प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में, फरवरी 2026 के दौरान मंडल ने यात्री एवं माल राजस्व, टिकट जांच, गैर-भाड़ा राजस्व (NFR) तथा व्यवसाय विकास के क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। मंडल ने न केवल राजस्व में वृद्धि दर्ज की है, बल्कि माल लदान और यात्री सुविधाओं के क्षेत्र में भी पिछले वर्ष की तुलना में महत्वपूर्ण प्रगति हासिल की है।

कुल राजस्व प्रदर्शन

- कुल आयः फरवरी 2026 में 690 करोड़ का कुल राजस्व अर्जित किया गया, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 11.10% अधिक है।
- यात्री राजस्वः 158.02 करोड़ अर्जित किए गए (15.77% की वृद्धि)।
- माल राजस्वः 514.68 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ (10.53% की वृद्धि)।
- टिकट जांचः टिकट जांच अभियान के माध्यम से 2.75 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ (11.79% की वृद्धि)।
- अन्य स्रोतः अन्य विविध स्रोतों से 14.50 करोड़ की आय अर्जित की गई।

माल लदान में ऐतिहासिक उपलब्धि

- वैगन लदानः प्रतिदिन औसतन 2902.74 वैगन लोड किए गए, जो पिछले वर्ष से 7.93% अधिक हैं।
- माल ढुलाईः औसतन 3.92 मिलियन टन प्रतिदिन माल ढुलाई दर्ज की गई (14.70% की वृद्धि)।
- नमक लदानः नमक का लदान औसतन 392.82 वैगन प्रतिदिन रहा (42.71% की भारी वृद्धि)।
- कंटेनर एवं फर्टिलाइज़रः कंटेनर लदान में 6.36% और फर्टिलाइज़र लदान में 33.47% की वृद्धि दर्ज की गई।
- नया कीर्तिमानः गांधीधाम क्षेत्र में एक ही दिन में 15 लॉन्ग हॉल मालगाड़ियों का परिचालन कर नया रिकॉर्ड स्थापित किया गया।

गैर-भाड़ा राजस्व (NFR) एवं नवाचार

- लक्ष्य से अधिक प्राप्तिः वार्षिक लक्ष्य 13 करोड़ को पार करते हुए 13.18 करोड़ की अब तक की सर्वाधिक गैर-भाड़ा आय अर्जित की गई।
- पार्किंग राजस्वः पार्किंग से 3.12 करोड़ की आय हुई, जो पिछले वर्ष से 17% अधिक है।
- नवाचारः भीमासर में औद्योगिक नमक के लदान हेतु स्टेनलेस स्टील कंटेनर का उपयोग शुरू किया गया, जो टिकाऊ माल प्रबंधन की दिशा में एक नया मानक है।

यात्री सेवाएँ एवं डिजिटल प्रगति

- वंदे भारत एक्सप्रेसः 16 फरवरी 2026 से असारवा-उदयपुर सिटी वंदे भारत एक्सप्रेस का संचालन प्रारंभ हुआ।
- होली स्पेशलः होली पर्व पर विशेष ट्रेनों की 30 ट्रिप संचालित की गईं, जिनसे 0.47 लाख यात्रियों को लाभ हुआ और 5.12 करोड़ का राजस्व प्राप्त हुआ।
- डिजिटल टिकटिंगः डिजिटल माध्यमों को बढ़ावा देते हुए PRS में 23.81% और UTS में 34.45% लेनदेन डिजिटल तरीके से संपन्न हुए।

अवसंरचना एवं परिचालन दक्षता

- क्षमता विस्तारः गांधीधाम–आदिपुर खंड पर चौथी लाइन (Quadrupling) का सफलतापूर्वक कमीशनिंग किया गया।
- आधुनिक प्रबंधनः सांतलपुर में आधुनिक 'क्रू मैनेजमेंट सिस्टम' (CMS) का शुभारंभ हुआ।
- परिचालनः DFC डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर पर प्रतिदिन औसतन 96.86 ट्रेनें चलाई गईं, जो पिछले वर्ष से 18.83% अधिक है।

स्वच्छता एवं प्रवर्तन

- टिकट जांचः विशेष जांच अभियानों के दौरान 3,801 अनियमित यात्रा के मामले पकड़े गए और 26.57 लाख का जुर्माना वसूला गया।
- स्वच्छताः एंटी-लिटरिंग अभियान के तहत 1,120 मामलों में दंडात्मक कार्रवाई की गई।

फरवरी 2026 में अहमदाबाद मंडल का यह प्रदर्शन दर्शाता है कि राजस्व सृजन, माल लदान, डिजिटल प्रगति एवं परिचालन क्षमता जैसे सभी प्रमुख क्षेत्रों में मंडल निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर है।

होली पर्व के दौरान यात्री भीड़ प्रबंधन हेतु व्यापक व्यवस्थाएँ: उन्नत भीड़ नियंत्रण उपायों से सुगम एवं सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित

अहमदाबाद मंडल से 3 लाख से अधिक यात्रियों ने किया सफर

होली पर्व के अवसर पर बढ़ी हुई यात्री भीड़ को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए पश्चिम रेलवे द्वारा व्यापक एवं सुव्यवस्थित व्यवस्थाएँ की गईं। सभी विभागों के मध्य सुदृढ़ समन्वय स्थापित करते हुए यह सुनिश्चित किया गया कि अपने गृह नगरों की ओर यात्रा करने वाले यात्रियों को सुरक्षित, सुगम एवं निर्बाध यात्रा सुविधा प्राप्त हो।

पश्चिम रेलवे ने होली पर्व के दौरान बढ़ी हुई यात्री भीड़ को ध्यान में रखते हुए फरवरी के अंतिम सप्ताह तथा मार्च माह में अपने स्टेशनों से 308 विशेष ट्रेनों के फेरे संचालित करने की घोषणा की है। इसी क्रम में 21 फरवरी से 02 मार्च, 2026 के दौरान पश्चिम रेलवे ने गोरखपुर, बनारस, दानापुर, समस्तीपुर, दरभंगा, भगत की कोठी (जोधपुर), हरिद्वार, रक्सौल, हजरत निजामुद्दीन, दिल्ली सहित अन्य महत्वपूर्ण स्टेशनों के लिए कुल 266 विशेष ट्रेनों का संचालन किया। ये विशेष ट्रेनें उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान एवं गुजरात जैसे प्रमुख राज्यों को जोड़ते हुए यात्रियों की अतिरिक्त मांग को पूरा करने हेतु चलाई गईं। 27 फरवरी से 02 मार्च, 2026 की अवधि के दौरान पश्चिम रेलवे द्वारा 27 लाख से अधिक यात्रियों को उनके गंतव्य तक सुरक्षित एवं सुगम यात्रा सुविधा प्रदान की गई। अहमदाबाद मंडल

के अंतर्गत अहमदाबाद, साबरमती, असारवा, गांधीधाम एवं भुज स्टेशनों से 27, 28 फरवरी एवं 01 मार्च, 2026 को संचालित विशेष ट्रेनों के माध्यम से 3 लाख से अधिक यात्रियों ने यात्रा की।

स्टेशनवार यात्री संख्या इस प्रकार रही –

- अहमदाबाद से लगभग 1.55 लाख यात्री
- साबरमती से 70 हजार यात्री
- असारवा से 30 हजार यात्री
- गांधीधाम से 30 हजार यात्री
- भुज से 15.5 हजार यात्री
- भीड़ प्रबंधन हेतु प्रभावी कदम

होली पर्व के दौरान यात्रियों की सुविधा एवं सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित विशेष उपाय लागू किए गए –

- विशेष ट्रेनों के संबंध में निरंतर उद्घोषणाएँ कर यात्रियों में भ्रम की स्थिति से बचाव किया गया।
- इलेक्ट्रॉनिक डिस्प्ले बोर्ड पर ट्रेनों की अद्यतन जानकारी प्रदर्शित की गई।
- रेलवे कर्मचारियों द्वारा यात्रियों को मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान की गई।
- एटीवीएम एवं रेलवन ऐप के माध्यम से टिकट लेने हेतु जागरूकता अभियान चलाया गया।
- मोबाइल यूटीएस सुविधा के माध्यम से कतार में प्रतीक्षारत यात्रियों को टिकट उपलब्ध कराए गए।
- अतिरिक्त आरक्षण काउंटर, एटीवीएम एवं हैंडहेल्ड टिकटिंग टर्मिनल की व्यवस्था की गई।
- प्रमुख स्टेशनों पर होल्डिंग एरिया बनाकर यात्री आवागमन को सुव्यवस्थित किया गया।
- होल्डिंग एरिया में पेयजल, बैठने की व्यवस्था एवं अन्य आवश्यक सुविधाएँ सुनिश्चित की गईं।
- विशेष ट्रेनों की जानकारी प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक रूप से प्रसारित की गई।
- परिचालन आवश्यकताओं के अनुरूप ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों द्वारा त्वरित कार्रवाई की गई।
- प्रमुख स्टेशनों एवं ट्रेनों में रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) तथा टिकट जांच कर्मचारियों की पर्याप्त तैनाती की गई।
- संवेदनशील स्टेशनों पर सीसीटीवी के माध्यम से वास्तविक समय में निगरानी की गई।
- विशेष ट्रेनों की समयपालन सुनिश्चित करने हेतु निरंतर मॉनिटरिंग की गई।
- फुटओवर ब्रिज, प्लेटफॉर्म, प्रवेश/निकास द्वार एवं ट्रेनों में सुरक्षित चढ़ने-उतरने की व्यवस्था सुनिश्चित की गई।
- पश्चिम रेलवे अपने नेटवर्क पर यात्री आवागमन की सतत निगरानी कर रहा है तथा होली पर्व के दौरान यात्रियों को सुरक्षित, आरामदायक एवं सुविधाजनक यात्रा प्रदान करने के लिए अतिरिक्त विशेष ट्रेनों के संचालन एवं आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता हेतु पूर्णतः प्रतिबद्ध है।

रेल पटरी पार करने की प्रवृत्ति के विरुद्ध रेलवे सुरक्षा बल का जागरूकता अभियान

रेलवे ट्रैक के आसपास रहने वाले निवासियों द्वारा अनधिकृत रूप से पार करने की बढ़ती घटनाओं पर प्रभावी नियंत्रण के उद्देश्य से वडोदरा मंडल के रेल सुरक्षा बल द्वारा व्यापक जन-जागरूकता चलाया जा रहा है।

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस अभियान के अंतर्गत रेलवे लाइन के आसपास रहने वाले स्थानीय निवासियों को रेल पटरी को अनधिकृत रूप से पार न करने के बारे में जागरूक किया जा रहा है। उनसे अनुरोध किया जा रहा है कि रेलवे ट्रैक पार करते समय केवल अधिकृत समपार फाटक (लेवल क्रॉसिंग) अथवा निर्धारित फुट ओवर ब्रिज/अंडरपास का ही उपयोग करें।

श्री सक्सेना ने बताया कि यदि कोई व्यक्ति रेल पटरी को अवैध रूप से पार करते पाया जाता है, तो उसके विरुद्ध रेल अधिनियम, 1989 की धारा 147 के अंतर्गत मामला दर्ज कर विधि अनुसार दंडात्मक कार्रवाई की जाती है। फरवरी 2026 के दौरान रेलवे सुरक्षा बल, वडोदरा मंडल द्वारा कुल 871 व्यक्तियों के विरुद्ध मामले दर्ज किए गए और उनसे कुल 13,000/- का जुर्माना वसूल किया गया।

वडोदरा मंडल सभी से अपील करता है कि रेल की पार न करें, यह जानलेवा भी हो सकता है।

पश्चिम रेलवे बांद्रा टर्मिनस और आज़मगढ़ के बीच चलाएगी होली सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा होली त्योहार के दौरान उनकी यात्रा मांग को ध्यान में रखते हुए बांद्रा टर्मिनस और आज़मगढ़ के बीच विशेष किराये पर एक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 05184 बांद्रा टर्मिनस–आज़मगढ़ स्पेशल 09 एवं 16 मार्च, 2026 को बांद्रा टर्मिनस से 10:45 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 20:10 बजे आज़मगढ़ पहुँचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 05183 आज़मगढ़–बांद्रा टर्मिनस स्पेशल 07 एवं 14 मार्च, 2026 को आज़मगढ़ से 23:15 बजे प्रस्थान करेगी और सोमवार को 08:10 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुँचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, सूरत, वडोदरा, रतलाम, नागदा, कोटा, गंगापुर सिटी, बयाना, ईदगाह आगरा, टूंडला, गोविंदपुरी, प्रयागराज जं., प्रयागराज रामबाग, ज्ञानपुर रोड, बनारस, वाराणसी, औड़िहार, दुल्लहपुर, मऊ एवं मोहम्मदाबाद स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में एसी 3-टियर (इकोनॉमी), स्लीपर श्रेणी तथा द्वितीय श्रेणी के सामान्य कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 05184 की बुकिंग 04.03.2026 से सभी पीआरएस काउंटरों तथा आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, संरचना एवं समय की विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे पर सेवा संकल्प प्रस्ताव का आयोजन

पश्चिम रेलवे द्वारा सोमवार, 02 मार्च, 2026 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा पारित 'सेवा संकल्प' प्रस्ताव के अनुपालन में 'सेवा संकल्प' का पालन किया। इस प्रस्ताव का वाचन किया गया तथा सार्वजनिक सेवा, ईमानदारी, पारदर्शिता एवं आधिकारिक कर्तव्यों के निर्वहन में जवाबदेही के प्रति प्रतिबद्धता की गंभीर पुष्टि करते हुए इसे अंगीकृत किया गया।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, पश्चिम रेलवे मुख्यालय कार्यालय में एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें महाप्रबंधक श्री प्रदीप कुमार ने मुख्यालय में प्रमुख विभागाध्यक्षों (PHoDs) के साथ तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से मंडल रेल प्रबंधकों (DRMs) एवं मुख्य कारखाना प्रबंधकों (CWMs) के साथ 'सेवा संकल्प प्रस्ताव' का संकल्प दिलाया। बैठक के उपरांत प्रस्ताव के सिद्धांतों के प्रभावी क्रियान्वयन तथा क्षेत्रीय स्तर पर लागू किए जाने वाले ठोस कार्यों की पहचान के संबंध में विस्तृत चर्चा की गई।

इसी प्रकार के आयोजन संबंधित प्रमुख विभागाध्यक्षों (PHoDs), मंडल रेल प्रबंधकों (DRMs), मुख्य कारखाना प्रबंधकों (CWMs) एवं जगजीवन राम अस्पताल के चिकित्सा निदेशक के नेतृत्व में मंडलों तथा उत्पादन इकाइयों/कारखाने में भी आयोजित किए गए। सभी कार्यालयों में अधिकारियों की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए 'सेवा संकल्प' की शपथ दिलाई गई। 'सेवा संकल्प' के महत्व एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए नागरिकों के कल्याण के प्रति समर्पण, नैतिक आचरण तथा उत्तरदायी प्रशासन पर विशेष बल दिया गया।